विदेशों में अणुव्रत की गूंज : पृष्ठभूमि एवं विहंगावलोकन

–डॉ. सोहनलाल गाँधी

अणुव्रत का अर्थ और उसकी पृष्ठभूमि

अणुव्रत दो शब्दों से बना है – 'अणु' और 'व्रत' । अणु का अर्थ है छोटा और हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह से निवृत होना व्रत है। अणुव्रत अर्थात् छोटे–छोटे संकल्प या व्रत । भगवान महावीर ने व्रतों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया – मुनि जीवन के लिए महाव्रत और ग्रहस्थ जीवन के लिए अणुव्रत। मुनि जीवन का लक्ष्य मोक्ष साधना है अतः उन्होंने उसके लिए पाँच महाव्रतों – अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह – पर आधारित कठोर दिनचर्या निर्धारित की । सभी मुनि बन जाए, ऐसा सम्भव नहीं है। ग्रहस्थ और मुनि दोनो समाज के अंग हैं। संयम दोनों के लिए जरूरी है किन्तु ग्रहस्थ के लिए पूर्ण संयम का पालन सम्भव नहीं है । अतः उन्होंने उसके लिए बारह व्रतों की आचार संहिता बनाई जिसके प्रथम पांच व्रतों को उन्होंने अणुव्रत नाम दिया । ये पांच अणुव्रत हैं – (1) संकल्पपूर्वक त्रस जीवों की हिंसा न करना, (2) ऐसे असत्य से दूर रहना जो गृह विनाश और ग्राम विनाश का कारण बने, (3) बिना दिए हुए दूसरों की वस्तु नहीं लेना, (4) पति–पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री–पुरुष से यौन सम्बन्ध स्थापित नहीं करना तथा (5) धन–धान्य आदि बाह्य परिग्रह की सीमा निर्धारित करना। इन्हीं अणुव्रतों के संकल्प को पुष्ट करने हेतु उन्होंने तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत और जोड़े। भगवान महावीर ने श्रावकों के लिए जो बारह व्रत (पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत) निर्धारित किए थे, वे उस समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाए गए थे किन्तु उनमें शाश्वत तत्व है। यही कारण है कि वे आज भी प्रासंगिक है और बड़ी संख्या में जैन लोग बारह व्रतधारी श्रावक बन कर अपने जीवन का उत्थान कर रहे हैं।

मानव सभ्यता बीसवीं सदी में प्रवेश कर चुकी थी । इसी सदी में भौतिक विकास चरम स्थिति में पहुँचा । विज्ञान ने मानव जीवन को आरामदायक तथा सभी सुख–सुविधाओं से सम्पन्न बना दिया । ज्यों–ज्यों भौतिक समृद्धि बढ़ी, समाज में नैतिक मूल्यों का क्रमशः क्षरण होने लगा, हिंसा, घृणा, विद्वेष, अत्याचार, अन्याय, असमानता एवं शोषण जैसी आसुरी प्रवृत्तियों का प्रभाव बढ़ने लगा । बीसवीं शताब्दी के प्रथम साढ़े चार दशक मानव जाति के लिए त्रासदिक रहे । इसी अवधि में दो विश्व युद्ध हुए जिसकी परिणति हिरोशिमा और नागासाकी की आणविक त्रासदी के रूप में हुई। लाखों निर्दोष लोग मारे गए । विश्व में भय और आतंक का साम्राज्य स्थापित होने लगा। एक ओर पश्चिम में बर्टेण्ड रसैल, मार्टिन लुथर किंग जैसी हस्तियाँ विशाल जनसभाओं का आयोजन कर आणविक नरसंहार के विरूद्ध जन चेतना जागृत कर रहे थे तो दूसरी ओर पूर्व में भारत के राजस्थान प्रान्त के थार रेगिस्तान में दूरस्थ छोटे–से शहर में बैठे जैन सम्प्रदाय के एक अपेक्षाकृत अज्ञात युवा आचार्य भी इसी तरह के मिशन में लगे हुए थे । यद्यपि उनका कार्य छोटे स्तर पर था, वे लोगों को हिंसा एवं अनैतिक आचरण छोड़ने की प्रेरणा देकर विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त कर रहे थे । उनका नाम था आचार्य तुलसी । वे पूरी मानवता के लिए काम करना चाहते थे । व्रत की परम्परा सभी धर्मों में विद्यमान है । यह अब भारतीय मानस का स्थाई संस्कार बन चुका है। व्यक्ति किसी कानून को तोड़ सकता है लेकिन एक बार व्रत ग्रहण करने के बाद उसे तोड़े की वह कल्पना भी नहीं करता । आचार्य तुलसी भारतीय मानस की इस नब्ज को पहचानते थे। अतः उन्होंने इसी व्रत परम्परा को आधार बनाकर अपने सामाजिक सौष्ठव के भावी अभियान की रूपरेखा पर चिंतन किया ।

उन्हें अंतरआत्मा की आवाज सुनाई दी जिसने उन्हें आदेश दिया कि वे सम्प्रदाय की संकीर्ण दिवारों से ऊपर उठकर जातिवाद, अस्पृश्यता, स्त्रियों पर अत्याचार, धार्मिक असहिष्णुता, हिंसा एवं

घृणा के विरूद्ध अभियान प्रारम्भ करे। यह ठीक उसी तरह था जैसे गेलिलि समुद्र के किनारे चहलकदमी करते हुए जिसस क्राइस्ट के आव्हान पर साइमन और एण्ड्रयू आगे आए । अंतर केवल इतना ही था कि जिस आवाज को आचार्य तुलसी ने सुना, वह भीतर से आई थी । यह आवाज अमन एवं शांति की तलाश का आव्हान था।

शांति की खोज : आचार्य तुलसी के विश्व शांति के सूत्र

आचार्य तुलसी की शांति की खोज द्वितीय विश्व युद्ध के आखरी चरण 1945 में प्रारम्भ हो चुकी थी । 1944 में यहूदी और इसाई नेताओं तथा इंगलैण्ड के आर्कबिशप के हस्ताक्षरों से विश्व शांति के लिए घोषणा–पत्र जारी हुआ था और विश्व के विभिन्न सम्प्रदायों के धर्माचार्यों के पास सुझाव के लिए भेजा गया । यह परिपत्र आचार्य तुलसी के पास फरवरी 1945 में पहुँचा । 31 वर्ष की युवावस्था में आचार्य तुलसी ने 'अशान्त विश्व को शांति का संदेश' शीर्षक से उन नेताओं को अपने विचार भेजे । आचार्य तुलसी ने इस संदेश में वास्तविक शांति (मोक्ष) के तीन साधन बताए – महाव्रत, अणुव्रत तथा सम्यकत्व । महाव्रत उन लोगों के लिए है जो दुनिया से विरक्त हो गए हैं और मोक्ष उनका अंतिम लक्ष्य है । दुनिया में रहकर भी वह शांति और सुखी जीवन जी सकता है, यदि वह भगवान महावीर द्वारा अपने श्रावकों के लिए निर्धारित बारह व्रतों का पालन करे । यदि वह भी सम्भव न हो तो कम से कम वह सम्यकत्व का तो अवश्य पालन करे । सम्यकत्व का अर्थ है जीव, अजीव, पाप, पुण्य, आस्रव, संवर, बंध, निर्जरा और मोक्ष आदि नौ तत्वों में विश्वास – अर्थात् व्यक्ति सही दृष्टि या सही आस्था विकसित करें लेकिन यदि सम्यकत्व का पालन भी सम्भव न हो तो वह कम से कम विश्व शांति के इन नौ आधारभूत नियमों का पालन करे ।

(प) दैनन्दिन जीवन में अहिंसा का पालन हो तथा अहिंसा की संस्कृति का प्रचार किया जाए।

(पप) क्रोध, मान, माया तथा लोभ जैसे कषायों को कम करने का प्रयत्न किया जाए।

(पपप) शिक्षा पर दृष्टिकोण बदले । शिक्षा का उद्देश्य भौतिक समृद्धि नहीं अपितु आंतरिक विकास हो । इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयत्न किए जाए।

(पअ) सभी भावी सरकारों के आधार स्तम्भ न्याय, समानता एवं सदाचार बने ।

(अ) भौतिक लाभ के लिए वैज्ञानिक आविष्कार बंद किए जाए। कम से कम उनका युद्धों के लिए इस्तेमाल न हो ।

(अप) संकीर्ण राष्ट्रवाद को बढ़ावा न दिया जाए । वसुधैव कुटुम्बकम (पूरा विश्व एक परिवार है) में निहित सार्वभौमिक भ्रातृत्व का प्रचार किया जाए ।

(अपप) खाने–पीने की आवश्यकता से अधिक वस्तुओं की जमाखोरी रोकी जाए । दूसरों की सम्पत्ति हड़पने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगे ।

(अपपप) जाति, धर्म एवं वर्ण के आधार पर कोई व्यक्ति, राज्य या राष्ट्र कमजोर व्यक्ति पर अत्याचार न करे । सभी न्याय, निष्पक्षता एवं मानवीयता का अभ्यास करे ।

(पग) जबरन सेना या सरकार किसी पर दूसरा धर्म न थोंपे । हर व्यक्ति को अपने पसंद का धर्म चुनने की स्वतंत्रता हो ।

यह संदेश आचार्य तुलसी की युवावस्था की वैश्विक सोच दर्शाता है। वस्तुतः इसे अणुव्रत आन्दोलन का पुरोवर्ती कहा जा सकता है। इसका प्रकाशन 1946 में हुआ था और उसकी एक प्रति गाँधीजी को भेजी गई। उन्होंने ऐसे शाश्वत संदेश के विलम्ब से प्रकाशन के लिए उपालम्भ दिया और पुस्तिका के हासिये में लिखा कि क्या सम्यकत्व का प्रचार किया गया ? विश्व शांति के लिए

आचार्य तुलसी द्वारा सुझाए गए नौ नियमों को पढ़कर गाँधीजी ने अलग हासिए में लिखा – मेरी इच्छा है कि दुनिया के सभी लोग इस महापुरुष द्वारा दिखाए गए शांति के मार्ग पर चले ।

नया युग : नए अणुव्रत

समय बीतता गया और इस बीच भारत का विभाजन हुआ । हिन्दू–मुस्लिम संघर्ष में लाखों लोग मारे गए । आचार्य तुलसी का हृदय द्रवित हो उठा । उन्होंने धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा, अनैतिकता, भ्रष्टाचार के प्रवाह को रोकने के लिए चिंतन किया और सोचा – 'क्यों न भगवान महावीर के अणुव्रत दर्शन के आधार पर इस युग के लिए नए अणुव्रतों का सृजन किया जाए और उसे एक जन आन्दोलन के रूप में परिवर्तित किया जाए ताकि लोगों की सुषुप्त चेतना जागृत हो सके और वे नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त कर सके।' महीनों तक चिंतन, मनन एवं विश्लेषण का दौर चला। वर्तमान युग की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर छोटे–छोटे व्रत बनाए गए । प्रारम्भ में व्रतों की संख्या अधिक थी जो अंत में ग्यारह तक सीमित हो गई । भगवान महावीर के श्रावकों के लिए निर्धारित बारह व्रतों का ही यह विस्तार था । प्रथम चार अणुव्रतों का निर्धारण वर्तमान युग के परिप्रेक्ष्य में प्रचलित हिंसा के विभिन्न रूपों को ध्यान में रखकर किया गया था । उनमें निर्दोष प्राणियों की हत्या न करने के मूल अणुव्रत के साथ ही किसी पर आक्रमण न करने तथा तोड़फोड़ मूलक हिंसात्मक आन्दोलनों में भाग न लेने जैसे दो और सामयिक दृष्टि से प्रासंगिक अणुव्रत जोड़ दिए गए । मानवीय एकता में विश्वास, धार्मिक सहिष्णुता तथा व्यापार में प्रामाणिकता को प्रोत्साहित करने जैसे आगे के तीन अणुव्रत आज के युग की नितान्त आवश्यकताएँ हैं। अगले पाँच अणुव्रत व्यक्ति को अब्रह्मचर्य एवं परिग्रह की सीमाएँ निर्धारित करने, चुनावों में अनैतिक साधनों का उपयोग न करने, कुरीतियों को प्रोत्साहित न करने, नशा मुक्त जीवन जीने तथा पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहने के लिए प्रतिबद्ध करते हैं। ये अणुव्रत सबके लिए जरूरी हैं और इनके अतिरिक्त शिक्षकों, व्यापारियों एवं विद्यार्थियों के लिए भी वर्गीय अणुव्रत है। उन ग्यारह अणुव्रतों के अलावा व्यक्ति जिस वर्ग से सम्बन्धित हैं, उस वर्ग के अणुव्रतों का पालन करने के लिए भी वचनबद्ध है। आचार्य तुलसी का विश्वास था कि यदि व्यक्ति सुधर जाता है तो समाज और राष्ट्र स्वतः ही सुधर जाएँगे । यदि व्यक्ति इन छोटे–छोटे संकल्पों में बंध कर अपने जीवन को बदलता है, रूपान्तरित होता है तो सामाजिक सौष्ठव का स्वप्न शनैः–शनैः साकार हो सकता है ।

अणुव्रत का पहला अधिवेशन : विदेशों में अणुव्रत की प्रथम गूंज

आचार्य तुलसी ने न केवल श्रावक–श्राविकाओं अपितु अपने विशाल धर्मसंघ को भी इस पुनीत कार्य में लगा दिया । उनके पास जीवनदानियों (साधु–साध्वियों) की विशाल सेना थी जो छोटे–छोटे समूहों में विभक्त होकर देश के कौने–कौने में पदयात्राएँ कर रहे थे । उनका लक्ष्य लाखों लोगों को अणुव्रती बनाना था । आचार्य तुलसी ने अपने 1950 के चातुर्मास के लिए दिल्ली को चुना । चांदनी चौक दिल्ली में अणुव्रत का प्रथम अधिवेशन आयोजित किया गया । ऊँचे पट्ट पर तेजस्वी आचार्य तुलसी विराजमान थे जो वस्तुतः अब अणुव्रत अनुशास्ता थे । एक ओर धवल वस्त्रों में बड़ी संख्या में साधु–साध्वी और दूसरी ओर विभिन्न वेषभूषाओं में आचार्य तुलसी के श्रावक–श्राविकाएँ बैठे थे । मनोरम दृश्य था । आचार्य तुलसी ने कहा – '*अणुव्रत अभियान सबके लिए है, चाहे वह हिन्दू हो, या इसाई या मुसलमान । जो जिस धर्म का अनुयायी है, अणुव्रत उसे उसी धर्म का बेहतर अनुयायी बनने की प्रेरणा देता है। यह अच्छे इंसान बनाने का रचनात्मक उपक्रम है। मेरा विश्वास है कि यदि एक अणु में दुनिया को नष्ट करने की ताकत है, जैसा हमने हिरोशिमा एवं नागासाकी में देखा तो अब हमारे पास अणुव्रत में इसका प्रतिरूप है जो अणुबम के खतरे से मानवता की रक्षा कर सकता है।*' इस अधिवेशन में भारतीय पत्रकारों के अलावा विदेशी समाचार–पत्रों के दिल्ली स्थित प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित कया गया था, जिनमें से कई इस अवसर पर उपस्थित थे । आचार्य

तुलसी ने वक्तव्य जारी रखते हुए कहा – *'अणुव्रत आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य विश्व में अहिंसात्मक, सामाजिक, राजनैतिक विश्व व्यवस्था स्थापित करना है । समाज की सबसे छोटी इकाई व्यक्ति है। हर व्यक्ति अणुव्रती बने, यह मेरा आव्हान है।'* इस आव्हान के उत्तर में 600 लोग अणुव्रती बनने के लिए खड़े हो गए । उन्होंने रिश्वत न लेने और न देने, मिलावट और कालाबाजारी न करने तथा निर्दोष प्राणियों की हिंसा न करने के की प्रतिज्ञाएँ ली जिनका वाचन आचार्य तुलसी कर रहे थे और ऊँचे स्वर में ये व्यक्ति उनको दोहरा रहे थे । यह अधिवेशन देश–विदेश के लोगों का ध्यान आकर्षित करने में सफल रहा ।

दूसरे दिन देश के प्रमुख अखबारों ने अपने मुख पृष्ठों पर विभिन्न शीर्षकों से समाचार प्रकाशित किए जिनका सार था सतयुग आने वाला है। न्यूयार्क से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक पत्र टाइम ने अपने 15 मई 1950 के अंक में 'अणुव्रत बनाम अणुबम' शीर्षक से विशेष सम्पादकीय लिखा जिसमें आचार्य तुलसी एवं दुनिया को अनैतिकता से मुक्त करने के उनके दृढ़ संकल्प की चर्चा की गई तथा उनके इस भागीरथी मिशन के लिए शुभकामनाएँ दी। समुद्र पार यह अणुव्रत की प्रथम गूंज थी ।

अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्क के प्रारम्भिक वर्ष

आन्दोलन के तीन दशक पूरे हो रहे थे । वह अपने उद्भव के चौथे दशक में प्रवेश कर चुका था । गुरुदेव तुलसी प्रारम्भ से ही अणुव्रत आन्दोलन को विश्वव्यापी बनाने का स्वप्न लेकर चल रहे थे। शुभकरण दस्साणी जैसे प्रबुद्ध कार्यकर्ता आचार्य तुलसी के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार थे । उनकी सोच व्यापक थी तथा हिन्दीं एवं अंग्रेजी भाषा में उनका अभिव्यक्ति कौशल एवं संवादशीलता बेजोड़ थी । राष्ट्रीय नेताओं से वे तुरन्त मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लेते और फिर वे उन्हें आचार्य तुलसी के सम्पर्क में लाते । राष्ट्रीय नेताओं, चिंतकों, साहित्यकारों एवं पत्रकारों को तो उन्होंने सफलतापूर्वक अणुव्रत से जोड़ा ही लेकिन भारत में आने वाले विदेशी विद्वानों से सम्पर्क करने में भी वे पीछे नहीं रहे । विदेशों में अणुव्रत संदेश पहुँचे, उसके लिए वे विभिन्न विदेशी प्रतिनिधिमण्डलों से उनके भारत आगमन पर मिलने का प्रयास करते । कभी–कभी उन्हें सफलता भी मिल जाती थी। दिल्ली में आचार्य श्री विराज रहे थे । यूनेस्को के तत्कालीन महानिदेशक डॉ. लूथर इवांस भारत के दौरे पर थे । दस्साणी जी प्रो. एम.कृष्णमूर्ति के साथ उनसे मिलने पहुँचे और अणुव्रत आन्दोलन की जानकारी दी, लम्बी चर्चा हुई । प्रो. कृष्णमूर्ति ने पहले से ही अणुव्रत पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार की तिथि घोषित कर रखी थी । उन तिथियों में डॉ. लूथर इवांस दिल्ली में ही थे । अतः उन्होंने उस सेमिनार का उद्घाटन करना स्वीकार कर लिया । विदेशी दूतावासों के कई प्रतिनिधि भी इस सेमिनार में भाग लेने आए । आचार्य तुलसी का उद्बोधन प्रेरक रहा । बड़े पैमाने पर यह पहला अंतर्राष्ट्रीय आयोजन था । मुम्बई में आचार्य तुलसी के प्रथम चातुर्मास में वहीं के आर्कबिशप फादर विलियम्स से सम्पर्क हुआ । वे कई बार आचार्य श्री की सभाओं में उपस्थित हुए तथा अणुव्रत के समर्थन में ओजस्वी भाषण दिए । समय–समय पर वे विदेशी बंधुओं को भी आचार्य श्री के दर्शनार्थ लाते । इस तरह विभिन्न स्तरों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्क कार्य भी साथ–साथ चलता रहा । आचार्य श्री अपने मुम्बई चातुर्मास के दौरान इण्डियन नेशनल चर्च में भी पधारे, वहां प्रवचन किया । फादर विलियम्स ने बाद में लिखा – *जैनों को आचार्य तुलसी में भगवान महावीर के दर्शन होते हैं और बौद्ध धर्मावलम्बी उनमें भगवान बुद्ध देखते हैं, जिसस क्राइस्ट के हम अनुयायी उनमें हमारे भगवान जिसस क्राइस्ट की ज्योति देखते हैं।* आचार्य तुलसी ने जिसस के 'अपने शत्रुओं से प्रेम करो' के उपदेश को एक व्यावहारिक नारे में बदल दिया – *जो करे हमारा विरोध, हम उसे समझे विनोद* अर्थात् किसी से घृणा मत करो ।

कई विदेशी विद्वान एवं सामाजिक कार्यकर्ता समय–समय पर आचार्य तुलसी से मिलने आते रहे, उनमें से कुछ उल्लेखनीय लोगों के नाम दे रहा हूँ जिन्होंने आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर बाद में भावपूर्ण पत्र लिखे –

(प) डॉ. विलियम नोरमन ब्राउन, अध्यक्ष – साउथ–इस्ट ऐशियन स्टडीज डिपार्टमेंट पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय अमेरिका ।

(पप) डॉ. फिलिप पार्डीनस, डीन फेकल्टी ऑफ हिस्ट्री एण्ड आर्ट्स, इबेरो अमेरिकाना यूनिवर्सिटी, मेक्सिको ।

(पपप) प्रोफेसर वाल्टर शुब्रिंग, हेम्बर्ग यूविर्सिटी, जर्मनी ।

(पअ) बेरून फ्रे वोन बलोम्बर्ग, बोस्टन, अमेरिका ।

(अ) प्रोफेसर लुई रेनु, अध्यक्ष – इण्डोलोजी पेरिस यूनिवर्सिटी ।

(अप) वुडलेंड कहलद, अध्यक्ष – इन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ वेजिटेरियन्स ।

1981 में समण–समणी श्रेणी के अस्तित्व में आने के बाद विदेश यात्राएँ प्रारम्भ हुई। वेटिकन के तत्वावधान में होने वाली विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों की अंतर्राष्ट्रीय बैठकों में दस्साणी जी एवं कुछ समणीवृन्द भाग लेते रहे । समणीजी स्मितप्रज्ञाजी (अब साध्वीप्रमुखा जी) ने गुरुदेव के अंतर्राष्ट्रीय मिशन को आगे बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दिया । विदेशों में होने वाले अनेक सम्मेलनों में उन्होंने अणुव्रत और जैन दर्शन की प्रस्तुतियाँ देकर हमारी पहचान स्थापित की । आज उनके बाद अनेक समणी समूह अमेरिका एवं इंगलैण्ड में केद्र संचालित कर रही हैं।

अणुव्रत इन्टरनेशनल की स्थापना

1985 में आचार्य तुलसी अपने आचार्य काल के पचास वर्ष पूरे करने जा रहे थे। जैन आचार्य परम्परा में यह एक नया कीर्तिमान था । उस शती में किसी भी जैन आचार्य ने अपने आचार्यत्व के 50 वर्ष पूरे नहीं किए थे । उनके शिष्यों ने इसे अमृत महोत्सव के रूप में मनाने का निश्चय किया। कार्यक्रमों की एक लम्बी सूची बनी । सबका विचार था कि अमृत महोत्सव की इस अवधि में अणुव्रत का सघन अंतर्राष्ट्रीय अभियान प्रारम्भ किया जाए । मैं कई वर्षों से विदेशों में अणुव्रत अभियान कैसे प्रारम्भ हो, इस पर चिंतन कर रहा था । अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) की स्थापना हो चुकी थी और आचार्य प्रवर ने मेरी अणुव्रत इंटरनेशनल की योजना को अणुविभा की स्वायत्त इकाई बनाने का निर्णय अहमदाबाद चातुर्मास में ही कर दिया था किन्तु अभी कार्य प्रारम्भ नहीं हो पाया । इस महोत्सव की योजना के निर्णय के साथ ही अणुव्रत इंटरनेशनल को सक्रिय करने का अवसर भी प्राप्त हुआ । जयपुर के तिलक नगर में इसके लिए कार्यालय किराए पर लिया गया । श्री शुभकरण जी दस्साणी ने इस कार्यालय को चलाने के लिए आवश्यक संसाधन जुटाए। प्रो. आर.पी. भटनागर को अणुव्रत इंटरनेशनल का प्रथम अध्यक्ष मनोनीत किया गया । युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ (बाद में आचार्य महाप्रज्ञ) का सुझाव था कि अंतर्राष्ट्रीय अभियान के पूर्व आचार्य तुलसी और अणुव्रत पर अंग्रेजी में उच्च स्तरीय पुस्तकें तैयार की जाए । प्रो. भटनागर के प्रधान सम्पादकत्व में एक वर्ष के अनवरत परिश्रम के बाद 'आचार्य तुलसी : फिफ्टी इयर्स ऑफ सेल्फलेस डेडिकेशन (आचार्य तुलसी : निःस्वार्थ समर्पण के पचास वर्ष)' नामक ग्रंथ की रचना की गई । मैंने इस ग्रंथ के लिए सन्दर्भ सामग्री जुटाई जो अधिकतर हिंदी में थी । प्रो. भटनागर के नेतृत्व में बनी टीम में मेरे अतिरिक्त डॉ. अशोक झा एवं डॉ. राजुल भार्गव को भी सम्मिलित कर लिया गया। उनकी देखरेख में अंग्रेजी में अनुवाद कार्य सम्पन्न हुआ। उक्त ग्रंथ आचार्य प्रवर एवं युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ को उनके आमेट चातुर्मास के दौर भेंट किया गया । इसके साथ ही मैंने अंग्रेजी में दो लघु पुस्तिकाएँ आंशिक रूप से

लिखी एवं सम्पादित की । एक आचार्य प्रवर की संक्षिप्त जीवनी थी जिसका नाम था – आचार्य तुलसी : पीसमेकर पार एक्सीलेंस तथा दूसरी अणुव्रत पर थी जिसका नाम था – अनुव्रत मूमेन्ट : अ कन्स्ट्रक्टिव एन्डेवर टूवार्डस अ मल्टीकल्चरल सोसाइटी। इस तरह हमारे पास अंग्रेजी में आचार्य तुलसी पर प्रकाशित ग्रंथ के अतिरिक्त दो और पुस्तकें उपलब्ध हो गई।

सम्पर्क और सहज सहयोग

अणुव्रत इंटरनेशनल का जयपुर में कार्यालय प्रारम्भ होने के बाद अंतर्राष्ट्रीय सम्पर्क कार्य नियमित रूप से प्रारम्भ हुआ । जब मैं गुलाबपुरा में अंग्रेजी अध्यापक था तब मुझे पता लगा कि इंगलैण्ड की वालंटीयर सर्विस ऑवरसीज नामक संस्था भारत के कुछ स्कूलों में स्वयंसेवी अध्यापक भेजती है जो बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाते थे । वे डेढ़ वर्ष के लिए आते थे और फिर दूसरा दल आ जाता । मैंने ब्रिटिश काऊंसिल के मारफत उक्त संस्था से सम्पर्क किया। लगातार पत्र लिखने के कारण उक्त संस्था ने हमारे स्कूल में अध्यापकों को भेजना शुरू कर दिया । 1966 से 1970 तक उक्त स्कूल में हर डेढ़ वर्ष बाद दो–दो ब्रिटिश अध्यापक आए जो मेरे सहयोग से अंग्रेजी पढ़ाते । उनमें से एक केनेथ ऑल्डफील्ड थे जो मेरे परम मित्र बन गए। उनके अलावा अन्य पाँच ब्रिटिश अध्यापक भी मेरे सम्पर्क में रहे । 1985 में वे सब अच्छे पदों पर कार्यरत थे । बस विदेशों में यही मेरा सम्पर्क था । उनके सहयोग से कुछ संस्थाओं का पता लगा और मैंने उन्हें अणुव्रत के बारे में लिखा तथा संस्थागत सहयोग मांगा । उन्हें गुरुदेव और अणुव्रत पर प्रकाशित अंग्रेजी पुस्तकें भेजी । इंटरनेशनल पीस ब्यूरो के महासचिव राइनर सांति का सकारात्मक उत्तर आया । उन्होंने अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) को इंटरनेशनल पीस ब्यूरो का सदस्य बनने के लिए आमंत्रित किया । अणुव्रत के सार्वभौम कल्याण के उद्देश्यों के कारण आई.पी.बी. की कार्यकारिणी ने अणुविभा की सदस्यता स्वीकार कर ली । आई.पी.बी. वस्तुतः विश्व में शांति के क्षेत्र में कार्य कर रही विभिन्न संस्थाओं का फेडरेशन है । इसके शांति के क्षेत्र में किए गए ठोस कार्यों के कारण 1910 में ही इसे नोबेल शांति पुरस्कार से नवाजा गया । इसका सदस्य बनते ही हम विश्व के पचास देशों में फैले शांति संगठनों से जुड़ गए । हमें विभिन्न संस्थाओं का साहित्य, विभिन्न देशों में होने वाले सम्मेलनों की सूचनाएँ आदि प्राप्त होने लगे ।

इसी दौरान राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर में हवाई विश्वविद्यालय से एक प्रोफेसर जैन दर्शन पर शोध के लिए विजिटिंग स्कोलर के रूप में आए । उनसे मेरी मित्रता हो गई । उन्होंने मुझे प्रो. ग्लेन डी. पेज का पता दिया और उनके सन्दर्भ से पत्र लिखने के लिए कहा । मैंने प्रो. पेज को लाडनूँ में विराजित गुरुदेव के दर्शन हेतु आमंत्रित किया । उन्होंने मेरा निमंत्रण स्वीकार किया और सितम्बर 1986 में लाडनूँ पधारे, तीन दिनों के प्रवास में उन्होंने आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ से अहिंसा पर लम्बी चर्चाएँ की। होनोलुलु में वे सार्वभौम अहिंसा केन्द्र (सेन्टर फॉर ग्लोबल नानवायलेंस) बनाने जा रहे थे और आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का मार्गदर्शन उनके लिए जरूरी था। लाडनूँ से वे मेरे साथ जयपुर आए, यहां एक दिन और रूके। उन्होंने आचार्य श्री तुलसी पर प्रकाशित तीनों पुस्तकों को उत्कृष्ट कोटि का बताया तथा मुझे मई 1987 में उनके द्वारा होनोलुलु में 'बौद्ध परिप्रेक्ष्य में शांति स्थापना' पर आयोजित किए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पत्र–वाचन के लिए आमंत्रित किया । मेरे लिए यह अप्रत्याशित घटना थी। कई विदेशी चिंतकों, प्राध्यापकों एवं सक्रिय अहिंसा के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के सामने जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में अणुव्रत की प्रस्तुति का सुन्दर अवसर था। लेकिन मेरा इस सम्मेलन में भाग लेना इस बात पर निर्भर था कि कार्यक्रम समिति द्वारा मेरा पेपर स्वीकार हो । मेरे लिए एक चुनौती थी। किसी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित सम्मेलन में एक केन्द्रीय विद्यालय में उपाचार्य पद पर कार्य कर रहे विद्यालयी शिक्षा से जुड़े व्यक्ति का पत्र–वाचन के लिए चयन असम्भव जैसा लग रहा था। गुरुदेव तुलसी प्रबल आशावाद के धनी थे । उन्होंने कहा – *किसी का ज्ञान इस बात पर निर्भर नहीं रहता कि कौन कहां काम कर रहा है । वह उसकी पढ़ने की प्रवृत्ति एवं ज्ञान अर्जन करने की*

उसकी क्षमता पर निर्भर करता है । तुम पेपर तैयार करो, सफलता अवश्य मिलेगी । आचार्य प्रवर के इस संदेश ने मुझे नई रोशनी प्रदान की । मैंने पेपर तैयार किया और सही समय पर भेज दिया । मेरी खुशी का ठिकाना न रहा जब प्रो. पेज ने तार द्वारा सूचना दी कि मेरा पेपर उक्त सम्मेलन में पढ़ने के लिए स्वीकार कर लिया गया है।

प्रथम विदेश यात्रा : होनोलुलु और टोक्यो में प्रस्तुतियाँ

विदेश जाने का मेरा यह पहला अवसर था । अकेला जाने में डर सा लग रहा था । समाज के वरिष्ठ श्रावक एवं तत्वज्ञ श्री मोतीलाल एच. रांका अणुविभा के अध्यक्ष थे । मैंने उन्हें भी इस सम्मेलन में सहभागिता के लिए निवेदन किया । वे तैयार नहीं हो रहे थे किन्तु गुरुदेव के इंगित के बाद उन्होंने भी अपना मन बना लिया । उनकी इच्छा थी कि उत्तमचंद जी सेठिया के छोटे भाई हंसराज जी सेठिया को भी इस यात्रा में सम्मिलित किया जा जाए। मैंने प्रो. पेज को पत्र लिखा और मेरे अलावा मोतीभाई एवं हंसराज जी को भी निमंत्रित करने के लिए निवेदन किया । वे दोनों स्वयं के खर्च पर चलने के लिए तैयार थे । उन्होंने उन दोनों के लिए भी औपचारिक निमंत्रण भेज दिया। मोतीभाई तेरापंथ प्रवक्ता थे तथा विद्वतापूर्ण भाषण के लिए जाने जाते थे। उनके नेतृत्व में विदेश जाने में मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। अमेरिका का वीजा आसानी से प्राप्त हो गया और हम 23 मई 1987 को वाया टोक्यो होनोलुलु पहुँचे।

(प) होनोलुलु में

सम्मेलन में पहुँचने पर प्रोफेसर पेज ने हम सब का परिचय कराया । मैंने पहले से ही तैयार जैन परिप्रेक्ष्य में अणुव्रत अहिंसा पर पत्र–वाचन किया। प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम चला और मुझे संतोष हुआ कि मेरी प्रस्तुति को सभी ने सराहा । 14 देशों के विद्वान इस सम्मेलन में भाग ले रहे थे । प्रो. पेज के अलावा अधिकांश ने अणुव्रत का नाम पहली बार सुना । जैन धर्म का ज्ञान भी न के बराबर था यद्यपि भगवान महावीर भगवान बुद्ध के समकालीन थे और जैन धर्म और बौद्ध धर्म श्रमण संस्कृति की दो धाराएँ थी। कई अन्य वक्ताओं के विचार भी सुने । तीन दिन तक चले इस सम्मेलन में हमें अनेक समूहों से गहन चर्चा का अवसर मिला । कई प्रोफेसर और विद्वान हमारे मित्र बने । सम्मेलन के आयोजक को प्रतिनिधियों ने सुझाव दिया कि मेरे एवं मोतीभाई के अलग से सार्वजनिक व्याख्यान आयोजित किए जाए । यह सुखद समाचार था। चौथे दिन विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, छात्र–छात्राओं एवं विदेशों से आए प्रतिनिधियों के सामने जैन दर्शन पर मोतीभाई का प्रभावशाली भाषण हुआ । वे हिन्दी में बोले और मैंने साथ–साथ अंग्रेजी में अनुवाद किया। उसके पूर्व मैंने जैन दर्शन पर संक्षिप्त प्रकाश डाला । भारत से रवना होने के पूर्व हम आचार्य श्री तुलसी पर अंग्रेजी में प्रकाशित ग्रंथ की सौ प्रतियाँ साथ लाए थे। सभी विदेशी विद्वानों को, जो कुल 50 थे तथा हवाई विश्वविद्यालय के चुने हुए प्राध्यापकों, रेक्टर, वाइस रेक्टर आदि को हमने ये पुस्तकें भेंट की ताकि बाद में अणुव्रत और आचार्य तुलसी के बारे में वे विस्तृत लेख पढ़ सकें।

इस सम्मेलन में जापान की प्रसिद्ध संस्था सोका गकाई इंटरनेशनल का प्रतिनिधिमण्डल भी भाग लेने आया हुआ था जिसके नेता योइशी शिकानो थे । हम दोनों के व्याख्यानों से वे बहुत प्रभावित हुए । वे हमारे कमरे में आए और दुभाषिए के मार्फत उन्होंने हमें लौटते वक्त टोक्यो स्थित सोका विश्वविद्यालय तथा इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएण्टल फिलोसोफी में भी अणुव्रत और जैन दर्शन पर विशेष व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया । भारत से रवाना होते वक्त जापान यात्रा की कल्पना भी नहीं थी । अतः जापान यात्रा के लिए विजा की समस्या थी, वह भी शिकानो ने हल कर दी । वे होनोलुलु स्थित जापान के काऊंसल जनरल से मिले और हमें जापान का वीजा प्राप्त हो गया । होनोलुलु प्रवास के अंतिम दिन होनोलुलु से प्रकाशित होने वाले सर्वाधिक प्रसारित दैनिक समाचार पत्र स्टार बुलेटिन की संवाददाता हमसे मिलने आई। उन्होंने समाचार पत्रों में प्रकाशित हमारे सार्वजनिक व्याख्यानों के बारे में पढ़ा था । वह मेरा साक्षात्कार करना चाहती थी। दूसरे दिन हम

साक्षात्कार के लिए उक्त समाचार पत्र के कार्यालय में गए । एक घण्टे तक जैन दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर मेरा साक्षात्कार हुआ जो दूसरे दिन उक्त समाचार पत्र में प्रमुखता से छपा ।

(पप) लोस एन्जल्स और टोक्यो में

पहले से ही निर्धारित हमारा अगला पड़ाव लोस एन्जलस था । वहां दो दिन रूके तथा हमने डिजनीलेंड, होलीवुड एवं यूनिवर्सल स्टूडियो का भ्रमण किया । लोस एन्जलस से हम 2 जून, 1987 को टोक्यो पहुँचे । टोक्यो में हम तीन दिन रहे। सोका विश्वविद्यालय तथा इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएण्टल फिलोसोफी में मेरे एवं मोतीभाई के भाषण हुए। विश्वविद्यालय के अधिकारियों से वार्तालाप हुआ । इस दौरान हम टोक्यो स्थित यूनाइटेड नेशन्स यूनिवर्सिटी कार्यालय में वाइस रेक्टर प्रोफेसर मुशाकोजी से मिलने गए । उन्होंने हमारा हार्दिक स्वागत किया । अणुव्रत अहिंसा पर विस्तृत चर्चा हुई तथा मुशोकोजी ने अहिंसा के क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं की संक्षिप्त जानकारी के लिए एक निदेशिका प्रकाशित करने की योजना पर विश्वविद्यालय की सहायता का विश्वास दिलाया ।

दो सप्ताह की अंतर्राष्ट्रीय अणुव्रत यात्रा सफलतापूर्वक सम्पन्न कर हम पुनः भारत पहुँचे। आचार्य प्रवर एवं युवाचार्य प्रवर के सामने विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की । गुरुदेव अत्यधिक प्रसन्न हुए और हमें आदेश दिया कि अणुविभा के तत्वावधान में अब यह क्रम निरंतर जारी रहे।

प्रथम विदेश यात्रा के 35 वर्ष बाद : पश्चदर्शन

प्रथम विदेश यात्रा सम्पन्न हुए 35 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं । मैं मुड़कर देखता हूँ तो मेरे स्मृति पटल पर कई दृश्य उभरते हैं। अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) के प्राण मोहनभाई का सहज स्मरण हो आता है जिनकी गुरुदेव तुलसी के मिशन को अंतर्राष्ट्रीय जगत में पहुँचाने की तड़फ ने संसाधनों की नितांत कमी और समाज के अपेक्षित सहयोग के अभाव के बावजूद विदेशों में अणुव्रत चक्र प्रवर्तन की निरंतरता को बनाए रखा । अणुविभा के प्रथम अध्यक्ष मोतीभाई रांका के असाधारण नेतृत्व एवं अणुव्रत महारथी देवेन्द्र भाई कर्णावट के मौलिक चिंतन के आलोक में विभिन्न देशों में अणुव्रत रथ मंथर गति से आगे बढ़ता रहा । विदेशों में अणुव्रत के व्यापक प्रसार के लिए गुरुदेव तुलसी ने अणुविभा के कार्यकर्ताओं को दो महत्वपूर्ण सूत्र दिए थे –

(प) विदेशों में आयोजित होने वाले विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में पत्र वाचन, विदेशी विश्वविद्यालयों के प्राच्य या एशिया अध्ययन केन्द्रों में अतिथि व्याख्याता बनने या उन्हीं के खर्च पर अणुव्रत अहिंसा या जैन दर्शन पर व्याख्यान शृंखलाओं के आयोजन की सम्भावना तलाशना तथा

(पप) अपने देश में समय–समय पर अंतर्राष्ट्रीय सममेलनों, संवादों एवं कार्यशालाओं का आयोजन करना।

किसी स्थाई कोष या अनुदान के अभाव में विदेशों में अणुव्रत के प्रचार–प्रसार का यही तरीका था लेकिन यह आसान नहीं था । अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के लिए घोषित विचारार्थ विषयों से जोड़कर अणुव्रत की प्रस्तुति करने का अर्थ था विदेशी सम्मेलनों में भाग लेने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति का मानव अस्तित्व से जुड़ी वैश्विक समस्याओं के परिदृश्यों का गहन अध्ययन हो और वह सम्मेलनों की कार्यक्रम समितियों के विचारार्थ विद्वता एवं शोधपूर्ण पेपर लिखने की योग्यता रखता हो। यह भी आवश्यक था कि वह अंग्रेजी भाषा में दक्ष हो तथा उसमें गुरुदेव के त्रि–आयामी अभियान – अणुव्रत, प्रेक्षा ध्यान एवं जीवन–विज्ञान की सही समझ हो । समाज में ऐसे गिने–चुने ही लोग थे जिनमें ऐसे सम्मेलनों के लिए उच्च कोटि के पेपर लिखने की योग्यता थी। समण–समणी श्रेणी का निर्माण इसी दृष्टि से किया गया किन्तु वे अभी तक इस मिशन के लिए पूरी तरह तैयार

नहीं थी। ऐसी निराशाजनक स्थिति के बावजूद पता नहीं मैं इस कार्य के लिए क्यों प्रस्तुत था । शायद गुरुदेव का चुम्बकीय व्यक्तित्व ही इसका कारण रहा हो । गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने महती कृपा कर मुझे समय–समय पर ज्ञानार्जन के अवसर प्रदान किए ।

हवाई विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ग्लेन डी. पेज, वेस्ट लंदन इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एज्यूकेशन के धार्मिक अध्ययन विभाग के निदेशक प्रो. केन ओल्डफील्ड, बर्टेण्ड रसैल पीस फाउण्डेशन यूके के केन कोट्स, इंटरकल्चरल ओपन यूनिवर्सिटी नीदरलैण्ड्स के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. जोन हकेमुल्डर तथा जापान की इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएण्टल स्टडीज के निदेशक डॉ. योइशी कवादा मेरे अच्छे मित्र तथा पथ–प्रदर्शक बन चुके थे। वे समय–समय पर मुझे शोध पत्रिकाएँ एवं ज्वलंत समस्याओं के सन्दर्भ में प्रकाशित नवीनतम पुस्तकें भेजते रहते । मैं निरंतर अध्ययनशील रहा और ऐसे पेपर लिखने की मेरी क्षमता क्रमशः विकसित होती गई जो आयोजकों द्वारा यात्रा–अनुदान के लिए भी स्वीकृत हो सके । जयपुर में अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) का व्यवस्थित अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय स्थापित किया गया । यह वर्षों तक किराए के मकान में संचालित होता रहा किन्तु जयपुर में अणुविभा केन्द्र का भवन बनने के बाद अब यह कार्यालय यहां स्थानान्तरित हो गया है । मैं केन्द्रीय विद्यालय संगठन में पूर्णकालिक उपाचार्य के पद पर कार्य कर रहा था । दोपहर तक अपनी ड्यूटी करता तथा शाम चार बजते ही मैं अणुविभा कार्यालय में पहुँच जाता और देर रात तक कार्य करता । इसके लिए मुझ पर न किसी का दबाव था और न आग्रह । मैं गुरुदेव तुलसी का एक स्वप्रेरित प्रतिबद्ध स्वयंसेवी कार्यकर्ता था। गुरुदेव द्वारा प्रदत्त दो सूत्र ही, जिनका जिक्र मैं ऊपर कर चुका हूँ, मेरे मार्ग के मानचित्र बने। एक ही धुन थी अणुव्रत की आवाज समुद्र पार सुनाई दे। अणुविभा को दो स्तरों पर काम करना था – देश में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन और विदेशी सम्मेलनों में सहभागिता । अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों की शृंखला के लिए गुरुदेव एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने एक स्थाई सामान्य विषय–वस्तु (थीम) निश्चित कर दी – 'इंटरनेशनल कांफ्रेस ऑन पीस एण्ड नानवायलेंट एक्शन' (शांति एवं अहिंसक उपक्रम पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन) और निर्देश दिया कि हर सम्मेलन में उसी विषय–वस्तु के अन्तर्गत कोई सामयिक विषय सोच लें।

शांति एवं अहिंसक उपक्रम पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन एवं अन्य आयोजन

पहले से ही यह सिद्धान्ततः तय था कि जो भी शांति एवं अहिंसक पर आयोजित किए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेना चाहे, वे स्वयं के खर्च से आवेंगे । सांकेतिक पंजीयन शुल्क भी देना होगा । इन शर्तों के कारण इन सम्मेलनों में ऐसे ही लागों के आने की सम्भावना बनी जो अहिंसा के प्रति प्रतिबद्ध थे और जो अपने–अपने देशों में आचार्य श्री के नया मानव बनाने के त्रि–आयामी मिशन से सम्बन्धित कोई प्रवृत्ति संचालित कर सके। मुझे यह कहते हुए हार्दिक संतोष एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि इन सम्मेलनों में आशा से अधिक विदेशी और भारतीय विद्वानों, जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओं, चिंतकों एवं पश्चिम के शांति आन्दोलनों से जुड़े लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इनमें सहभागिता करने वाले विदेशियों की संख्या एक हजार से भी अधिक है जिन्होंने पचास देशों का प्रतिनिधित्व किया । इनके अतिरिक्त इनमें भाग लेने वाले भारतीय विद्वानों, गांधीवादी एवं सर्वोदयी कर्ताओं तथा आध्यात्मिक नेताओं की संख्या ढाई हजार से भी ज्यादा है । कई लोग जैन और शाकाहारी भी बन गए। ये सब अब गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों के प्रबल समर्थक हैं तथा हमारे नेटवर्क से निकटता से जुड़े हुए हैं।

आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ का विचार था कि हिंसा का मुकाबला अहिंसा में लोगों को प्रशिक्षित करके ही किया जा सकता है । तीन ऐसे आयोजित अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविरों में भी कई विदेशियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । अणुव्रत की एक अंतर्राष्ट्रीय पहिचान बन चुकी है । इन सम्मेलनों के समापन पर घोषणा पत्र जारी किए गए जो हमारी अमूल्य निधि है । अणुविभा ने प्रायः ऐसे घोषणा पत्रों को प्रकाशित किया है । अहिंसा के शौध छात्रों एवं सामान्य

जनता दोनों के लिए ये पठनीय है क्योंकि उनमें वैश्विक दृष्टि है । अंग्रेजी भाषा में मैंने अणुविभा रिपोर्टर नामक एक त्रैमासिक पत्रिका भी शुरू की तथा कुछ सम्मेलनों के विस्तृत विवरण विशेषांकों के रूप में प्रकाशित किए । इन सब उपक्रमों से धर्मसंघ की अपूर्व प्रभावना हुई और विदेशों में अणुव्रत आन्दोलन न केवल एक शांति आन्दोलन के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है अपितु इसे भविष्य की पारिस्थितिकीय वहनीयता (इको–सस्टेनिबिलिटी ऑफ द फ्यूचर) सुनिश्चित करने वाला अग्रणी अभियान माना जा रहा है । शांति एवं अहिसंक उपक्रम पर आयोजित हुए सम्मेलनों की श्रृंखला में भी ऐसे ही विषयों का चयन किया गया जिनसे दुनिया में द्रुत गति से फैली रही हिंसा की संस्कृति, असहिष्णुता, पर्यावरण क्षरण, प्रदूषण, जैव–विविधता का संकट जैसी समस्याओं को सुलझाने में नई दृष्टि प्राप्त हो । इन्हीं विषयों के कारण बड़ी संख्या में विदेशी बंधु आए और अणुव्रत की आवाज दूर देशों में पहुँची । 35 वर्षों में अणुविभा 192 देशों में शांति एवं अहिंसक के क्षेत्र में कार्यरत दस हजार से भी अधिक संगठनों से जुड़ गई है । यदि अच्छी राशि के कोष की व्यवस्था हो तथा स्थाई सचिवालय बने तो इस नेटवर्क का धर्मसंघ की प्रभावना के लिए अपूर्व उपयोग हो सकता है।

गत 35 वर्षों में अणुविभा के तत्वावधान में दस वृहत अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन व तीन अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर एवं एक अंतर्राष्ट्रीय संवाद आयोजित किए जा चुके हैं। इस आलेख में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की चुन्नोतियों एवं सफलता का संक्षिपत विवरण दिया जा रहा है और शेष नौ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के केवल विचारणीय विषय एवं तिथियां ही दी जा रही हैं।

लाडनूं में आयोजित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों विदेषी एवं भारतीय शांतिकर्मियों का अपूर्व जमधट

अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तन के साथ ही गुरुदेव तुलसी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के पुनरूत्थान का यह अभिनव उपक्रम हमारे देष तक ही सीमित नहीं रहेगा। अणुव्रत गीत की अंतिम पंक्तियों में गुरुदेव तुलसी कहते हैं, 'तुलसी यह अणुव्रत सिंहनाद सारे जग में पसरेगा।' न्यूयार्क से प्रकाषित टाइम मेगजीन के सम्पादकीय में भी लिखा गया था कि आचार्य तुलसी अपने देष के अधिकांष लोगों को अणुव्रत नैतिक आचार के प्रति प्रतिबद्ध कर दूसरे देषों में भी यह अभियान चलाएंगे। होनोलुलु यात्रा के बाद जब मैं अमेरिका की फोरदेम यूनिवर्सिटी द्वारा निःषस्त्रीकरण पर सम्पन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में तथा जापान में गेन्स्यूकिन द्वारा आयोजित वर्ल्ड विदआउट वायलेंस में पत्र वाचन कर लौटा तो गुरुदेव ने सुझाव दिया कि शांति एवं अहिंसक उपक्रम पर प्रथम सम्मेलन लाडनूं में आयोजित किया जाये। 05 से 07 दिसम्बर, 1988 की तिथियां भी घोषित कर दी गई और मुझे इस सम्मेलन का संयोजक मनोनीत किया गया। मेरे लिए तथा अणुविभा के लिए यह एक गंभीर चुन्नोती थी। इस क्षेत्र में मेरा कोई अनुभव नहीं था। हां मैं तब तक चार विदेषों में सम्पन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में पत्र वाचन कर चुका था। उस वक्त न इंटरनेट था और न फैक्स। केवल पत्र व्यवहार, टेलेक्स और टेलीग्राम ही दूरसंचार के माध्यम थे। युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने सम्मेलन का विचारणीय विषय रखा, 'अहिंसक शक्तियों की एकजुटता–यूनिफाइंग फोर्सेज ऑफ नॉनवायलेंस।' जहां केवल पत्र व्यवहार द्वारा विदेषों में स्थित गैर–सरकारी शांति संगठनों को लाडनूं वाले सम्मेलन में आने के लिए प्रेरित करना एक चुन्नोतीपूर्ण एवं दुरुह कार्य था तो दूसरी ओर लाडनूं जैसे छोटे से कस्बे में विदेषियों को स्वयं के खर्च पर आने के लिए कहना और फिर उनके आने की अपेक्षा करना यथार्थ से परे था लेकिन गुरुदेव तुलसी प्रबल आषावादी और आष्वस्त थे। उन्होंने मुझे कहा, 'सोहन जी ! निराष होने की आवष्यकता नहीं है। सारा विष्व हिंसा से त्रस्त है। पष्चिमी दुनिया के बड़ी संख्या में लोग गांधीजी को आदर की दृष्टि से देखते हैं और अहिंसा में गहरी रुचि रखते हैं। सब कुछ निर्भर करेगा तुम्हारी प्रस्तुति पर। उनसे ग्रामीण परिवेष, जैन विष्व भारती और श्रमण परम्परा के व्यावहारिक स्वरूप एवं आकर्षण पर चर्चा करो।' गुरु के इंगित को षिरोधार्य कर मैंने निमंत्रण पत्र में इन विषेषताओं की संक्षिप्त व्याख्या कर उन्हें आकर्षित करने का प्रयत्न किया। मेरे पास विदेष स्थित दो हजार संस्थाओं एवं व्यक्तियों के पते थे। कम्प्यूटर के बारे में सुना था लेकिन 1988 में भारत में आम लोगों को कम्प्यूटर उपलब्ध नहीं था। केवल

टाइपराइटर एकमात्र सहारा था। सब प्रतिनिधियों को 3 तारीख को ही दिल्ली पहुंचने और सीधा बिना किसी स्वागतकर्ता की प्रतीक्षा किये होटल कनिष्क में पहुंचे। वहां के दिल्ली के युवकों ने व्यवस्था संभाल रखी थी। कुछ लोगों को टेलेक्स और टेलीग्राम भी भेजे गये। प्रतीक्षा करने के अलावा कोई चारा नहीं था। होटल कनिष्क में दिल्ली के युवक व्यवस्था संभाल रहे थे। गुरुदेव तुलसी का व्यक्तित्व वस्तुतः चुम्बकीय था तथा वे दूरदृष्टा थे। 03 दिसम्बर को 20 देषों से 90 से अधिक लोग दिल्ली पहुंच चुके थे। उनको बसों द्वारा लाडनूं लाया गया। बहुत से विदेषी दिल्ली से ट्रेन द्वारा सीधे भी पहुंचे। विदेषी प्रतिनिधियों की संख्या 130 पहुंच चुकी थी। उनके अलावा आमंत्रित भारतीय विद्वानगण तथा जमीन से जुड़े गांधीवादी अकार्यकर्ता और भारत के विभिन्न प्रान्तों से बड़ी संख्या में पहुंचे धर्मसंघ के श्रावक थे। तीन दिन लाडनूं जैविभा परिसर का नजारा संयुक्त राष्ट्र जैसा लग रहा था। जो लोग आये, बड़ी–बड़ी संस्थाओं के संचालक थे, विष्वविद्यालय में कार्यरत प्रोफेसर तथा जमीन से जुड़े शांतिकर्मी थे। गुरुदेव तुलसी एवं युवाचार्य (बाद में आचार्य) श्री के आकर्षण से सीधे चले गाये।

(प) शांति एवं अहिंसक उपक्रम पर दस वृहत अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

क्र.सं.	सम्मेलन में विचारार्थ विषय	स्थान	तिथियाँ एवं वर्ष
1	अहिंसक शक्तियों की एकता (ऊपर संक्षिप्त विवरण दिया जा चुका है।)	लाडनूँ	5–7 दिसम्बर, 1988
2	अहिंसा में लोगों को शिक्षित एवं प्रशिक्षित करने के लिए एक व्यवहार्य प्रणाली विकसित करना	बाल शांति निलयम, राजसमंद	17–21 फरवरी, 1991
3	प्रकृति के सामंजस्य में जीवन जीना	लाडनूँ	17–19 दिसम्बर, 1995
4	अहिंसा, शांति स्थापना एवं कलह शमन	नई दिल्ली	10–12 नवम्बर, 1999
5	शांति एवं अहिंसा की संस्कृति का वास्तविक अर्थ खोजना	बाल शांति निलयम, राजसमंद	23–25 फरवरी, 2003
6	हिंसा, गरीबी एवं भूख की चुनौतियाँ एवं समाधान	बाल शांति निलयम, राजसमंद	23–25 दिसम्बर, 2007
7	अहिंसक जीवनशैली के नए प्रतिमान का प्रारूप बनाना	जयपुर	10–12 नवम्बर, 2008
8	अहिंसक भविष्य की ओर : शांतिपूर्ण सह– अस्तित्व तथा वहनीयता के वास्तविक प्रतिमानों की खोज	जयपुर	5–7 जनवरी, 2014
9	विज्ञान, आध्यात्म और विष्वषांति	जयपुर	17–20 दिसम्बर, 2017
10	बच्चों एवं युवकों का अहिंसा प्रषिक्षण : वहनीय एवं अहिंसक भविष्य के लिए एक अनिवार्य शर्त	नई दिल्ली	17–20 दिसम्बर, 2019

(पप) अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर

1.	26–28 दिसम्बर, 2007	राजसमंद
2.	13–14 नवम्बर, 2008	जयपुर
3.	5–7 फरवरी, 2010	राजसमंद

(पपप) अहिंसा शिक्षण एवं प्रशिक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय संवाद

यह 1991 में लाडनूँ में आचार्य तुलसी एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ (तब युवाचार्य) के सान्निध्य में आयोजित किया गया और इसमें दलाईलामा, संयुक्त राष्ट्र की शांति अध्ययन की प्रमुख लुडविग, अंतर्राष्ट्रीय जगत में अहिंसा एवं शांति के उच्च कोटि के विद्वान एवं शोधकर्ता जोहान गेल्टूंग, मार्टिन लुथर किंग जूनियर केन्द्र से जुड़े प्रसिद्ध विद्वान बर्नार्ड लफायटे तथा एलफिन, प्रो. रामजी सिंह, गांधी विद्यापीठ गुजरात के कुलपति श्री रामलाल पारीख ने भाग लिया । प्रो. ग्लेन डी. पेज ने मोडरेटर का दायित्व निभाया । आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के अहिंसा प्रशिक्षण के सिद्धान्त पर विस्तृत चर्चा हुई तथा दलाईलामा एवं जोहान गेल्टूंग ने उनका खुलकर समर्थन किया ।

इन सम्मेलनों के आयोजकों में मोतीभाई, देवेन्द्र जी कर्णावट, मोहनभाई, संचय जैन, महेन्द्र जैन एवं श्री टी.के. जैन का न केवल वैचारिक सहयोग मिला अपितु इन्हें सफल बनाने में अथक परिश्रम किया । श्री उत्तमचंद जी सेठिया, श्री कन्हैयालाल जी पटावरी, श्री मांगीलाल जी सेठिया, श्री जसवंतराय जैन एवं श्री टोडरमलजी लालानी अणुव्रत अंतर्राष्ट्रीय अभियान के आधार स्तम्भ रहे हैं । इनके सक्रिय सहयोग के बिना कुछ भी सम्भव नहीं था । मेरा काम इन सम्मेलनों की योजनाएँ बनाना तथा वैश्विक स्तर पर प्रचारित कर अधिक से अधिक लोगों को सहभागिता के लिए प्रेरित करना था ।

अन्य महत्वपूर्ण राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय उपक्रम

- अहिंसा का अर्थ तथा वहनीय विष्व का दर्षन विषय पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन। सान्निध्य – आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य श्री महाश्रमण जी। स्थान – नई दिल्ली। एक सत्र की अध्यक्षता डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने की। यह सत्र राष्ट्रपति भवन में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में 80 विदेषी मेहमान 15 देषों से आये। 40 आमंत्रित भारतीय विद्वान। तिथि 05–07 दिसम्बर 2005।
- नई दिल्ली में आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में अंतःधर्म समझ और सहयोग पर 13 जुलाई 2014 को सम्पन्न गोष्ठी में। विभिन्न धर्मों के आध्यात्मिक नेताओं ने सहभागिता की। यह गोष्ठी संयुक्त राष्ट्र संघरा द्वारा 2007 में शांति के लिए अंतःधर्म समझ एवं सहयोग पर पारित प्रस्तावों के परिप्रेक्ष्य में आयोजित की गई थी।

अणुविभा को संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता

अंतर्राष्ट्रीय अभियान में सबसे बड़ी सफलता अणुविभा को एक गैर–सरकारी संगठन के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ की औपचारिक मान्यता प्राप्त करना थी। कई वर्षों के प्रयास के बाद 1998 में हमें यह सफलता मिली । इसका एक तात्कालिक लाभ यह हुआ कि हम संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 192 देशों में फैली समान विचारों वाली ऐसी ही मान्यता प्राप्त संस्थाओं से जुड़ गए । हमें एक नया प्लेटफॉर्म मिला और हमारा कार्यक्षेत्र विश्वव्यापी हो गया । संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित होने वाले सम्मेलनों की सूचनाएँ तथा निःशस्त्रीकरण पर प्रकाशित साहित्य प्रचुर मात्रा में प्राप्त होने लगे । इन मान्यता प्राप्त संस्थाओं का संयुक्त राष्ट्र हर वर्ष एक वार्षिक सम्मेलन भी आयोजित करता है । उनमें भी हमें भाग लेने का अवसर मिला और हजारों ऐसे कार्यकर्ताओं से सम्पर्क स्थापित हुआ जो शांति और अहिंसा की तलाश में भटक रहे हैं। अणुव्रत अभियान के लिए गुरुदेव ने हमें दो मोर्चों पर काम करने के लिए कहा था – अपने देश में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित कर विदेशी बंधुओं की वैचारिक प्रतिबद्धता प्राप्त करना तथा विदेशों में आयोजित होने वाले सम्मेलनों पत्र–वाचन, विश्वविद्यालयों तथा समान विचार वाली संस्थाओं के सहयोग से विभिन्न देशों में विशेष व्याख्यान आयोजित करना । घरेलु मोर्चे पर जो अंतर्राष्ट्रीय प्रभावना हुई, उसकी संक्षिप्त झलक मैंने प्रस्तुत की है । जो लोग विस्तृत जानकारी चाहते हैं, उन्हें अणुविभा कार्यालय आना चाहिए ताकि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध साहित्य पढ़कर वे काम का सही मूल्यांकन कर सकें।

आगे के पृष्ठों में दूसरे मोर्चे पर हुए काम (अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में सहभागिता) का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

विभिन्न देशों में प्रस्तुतियाँ एवं व्याख्यान

(प) समण–समणी वृन्द का योगदान

अणुव्रत अंतर्राष्ट्रीय अभियान दो स्तरों पर चला – एक देश में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन और दूसरा अन्य देशों में आयोजित ऐसे सम्मेलनों में सहभागिता करना । अब तक आयोजित की गई इन गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण आपने ऊपर के पृष्ठों में पढ़ा । अब मैं दूसरे स्तर पर संचालित अभियान का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। समण–समणी श्रेणी के अस्तित्व में आने के बाद विदेशों में काफी काम हुआ है । जैना के अध्यक्ष रहे डॉ. सुलेख जैन भारतीय मूल के प्रबुद्ध जैन हैं जिन्होंने नॉर्थ अमेरिका में बसे जैनों को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी तीव्र इच्छा थी कि समण–समणीजी अमेरिका में काम कर रहे जैन केन्द्रों में चातुर्मास व्यतीत करें तथा जैन नवयुवकों को जैन संस्कृति में शिक्षित करें । उनके निवेदन पर आचार्य प्रवर ने कुछ समणी समूहों को अमेरिका भेजा । अपने प्रवास के दौरान उन्होंने अनेक संस्थाओं में अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान पर व्याख्यान दिए । उन्होंने अन्य देशों की भी यात्राएँ की और भगवान महावीर के संदेश दूरस्थ देशों तक पहुँचाया । समण स्थितप्रज्ञ एवं समण सिद्धप्रज्ञजी ने विदेशों में जैनेतर लोगों में अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान की प्रभावक प्रस्तुतियाँ दी । समण–समणीवृन्द का विदेशों में अणुव्रत के प्रचार–प्रसार में अविस्मरणीय योगदान रहा है। समण स्थितप्रज्ञ तथा समण सिद्धप्रज्ञ जी ने अमेरिका के अलावा आस्ट्रिया, फिनलैण्ड, फ्रांस, स्वीट्जरलैण्ड, जापान एवं आस्ट्रेलिया तक की अनेक यात्राएँ की और गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ को विचारों के वैश्वीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

(पप) विदेशों में मेरे पत्र–वाचन और प्रस्तुतियाँ

इस आलेख में मैं विदेशों में अणुव्रत के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के विचारणीय विषयों पर मेरे द्वारा की गई प्रस्तुतियों का संक्षिप्त विवरण दे रहा हूँ ।

विदेशों में अणुव्रत की प्रस्तुति के लिए गुरुदेव द्वारा बताए गए दूसरे सूत्र का मैंने अक्षरतः पालन किया । ज्योंही किसी देश में अंतराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किए जाने की सूचना मिलती, मैं उनके विचारणीय विषय पर पेपर लिखने की तैयारी प्रारम्भ कर देता और सही समय पर पेपर भेज देता । पेपर स्वीकृत होने के बाद मैं यात्रा–अनुदान के लिए निवेदन करता । अस्सी प्रतिशत आयोजक मेरे अनुरोध को स्वीकार करते । अनेक बार मेरे बोलने के प्रस्ताव अस्वीकृत भी हुए लेकिन मैं निराश नहीं हुआ, मैं प्रयास करता रहा । अब तक 23 देशों में विभिन्न संस्थाओं, विश्वविद्यालयों एवं शांति अध्ययन केन्द्रों द्वारा आयोजित करीब 50 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में पत्र–वाचन कर चुका हूँ या विशेष व्याख्यान दिए हैं। जितने भी पत्र–वाचन मैंने किए हैं, उनको शीघ्र ही एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। अमेरिका एक ऐसा देश है जहां मैंने अलग–अलग शहरों में सर्वाधिक प्रस्तुतियाँ दी । उसके बाद इंगलैण्ड, जापान, जर्मनी उस क्रम में आते हैं जहां मुझे क्रमशः सात, पाँच एवं चार बार जाने का अवसर प्राप्त हुआ । मैं नीचे केवल आयोजक संगठन, शहर, देश, विषय एवं तिथियों का जिक्र कर रहा हूँ ताकि पाठकों को विदेशों में अब तक हुए कार्य की झलक मिल सके । विस्तृत विवरण शीघ्र एक बड़ी पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जावेगा। प्रथम अंतर्राष्ट्रीय यात्रा का विवरण पहले ही दिया जा चुका है ।

- वेस्ट लंदन इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एज्यूकेशन लंदन में बी.एफ.एस.एस. राष्ट्रीय धार्मिक शिक्षा केन्द्र द्वारा आयोजित व्याख्यान । विषय – 'जैन धर्म में रत्न त्रय' । 1 जून, 1988

- नेशनल कॉलिशन यू.एस.ए. द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ तृतीय निःशस्त्रीकरण सम्मेलन के समर्थन में फोरदेम विश्वविद्यालय न्यूयार्क में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन । विषय : अणुव्रत और निःशस्त्रीकरण । 7 जून से 9 जून, 1988

- गेन्स्युइविन (जापानीज कांग्रेस अगेंस्ट ए एण्ड एच बोम्ब्स) द्वारा हिरोशिमा–नागासाकी आणविक त्रासदी की 43वीं वर्षगांठ के अवसर पर टोक्यो तथा हिरोशिमा में आणविक शस्त्र मुक्त विश्व का निर्माण पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अणुव्रत एवं हिंसामुक्त दुनिया पर आयोजित कार्यषाला का नेतृत्व। 1 अगस्त से 6 अगस्त, 1988

- विदेशी भाषा के रूप में अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षकों की अंतर्राष्ट्रीय संस्था आइटफेल द्वारा वोरिक विश्वविद्यालय इंगलैण्ड में आयोजित वार्षिक सम्मेलन में अंग्रेजी भाषा शिक्षण एवं अनुवाद और शैक्षणिक प्रभाव पर पत्र वाचन । 31 मार्च से 3 अप्रैल 1989

- असिसि सेंटर हौलेण्ड पार्क लंदन में फादर जे मकटर्नन के आमंत्रण पर जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों पर असिसि सेन्टर के पेरिस के सदस्यों के लिए आयोजित दो व्याख्यान। 4–5 अप्रैल, 1989

- लंदन के सेन्टर फॉर इंटरफेथ प्रोग्राम में जैन दृष्टि में अहिंसा पर व्याख्यान।

- सोवियत विमन्स कमिटी द्वारा तासकंद एवं मास्को में आयोजित दक्षिण एशिया तथा प्रशांत क्षेत्रीय सम्मेलन में 'राजस्थान में महिलाओं की स्थिति' पर पत्र वाचन। 15 मई से 21 मई, 1989

- अणुव्रत और आचार्य तुलसी पर तासकंद रेडियो द्वारा हिन्दी में विशेष साक्षात्कार प्रसारण। 21 मई, 1989

- मास्को के विशेष स्कूल संख्या 26 के छात्रा–छात्राओं की विशेष सभा में भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर व्याख्यान । 25 मई, 1989

- इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स अगेंस्ट न्यूक्लीयर आर्म्स (आइएलाना) द्वारा हेग, द नीदरलैण्डस में आयोजित उनके प्रथम सम्मेलन में 'अणुव्रत तथा इसमें अंतनिर्हित शांति का संदेश' विषय पर पत्र वाचन । 25–26 सितम्बर, 1989

- पीस क्वेस्ट इंटरनेशनल (तब कॉपरेशन फॉर पीस) स्टोकहोम (स्वीडन) के निमंत्रण पर उनके सदस्यों के साथ आयोजित शांति अध्ययन, शांति यात्रा तथा शांति अध्ययन सप्ताह पर आयोजित विशेष संवाद में अणुव्रत के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुति । 26 से 30 सितम्बर, 1989

- अंग्रेजी को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाने वाले शिक्षकों की अंतर्राष्ट्रीय समिति (आइटफेल) द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मेलन में दुबारा सहभागिता । उपदेशात्मक साहित्य का अंग्रेजी में अनुवाद – एक चयनित अध्ययन पर पत्र वाचन । स्थान – ट्रिनीटी कॉलेज, डबलिन, आयरलैण्ड । तिथियाँ – 27 मार्च से 31 मार्च, 1990

- इटली – वेटिकन से जुड़ी संस्था सेंटर फॉर इण्डिया एण्ड इंटररिलिजियस स्टडीज, रोम द्वारा आयोजित सभा में 'अहिंसा अपरिग्रह : जैन धर्म के महानतम् धर्मादेश' पर व्याख्यान। 5 अप्रैल, 1990

- शांति संस्थान, हवाई विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विशेष कार्यशाला में अणुव्रत तथा प्रेक्षाध्यान की प्रस्तुति । इस यात्रा में गुरुदेव ने दो समणीजी को विशेष रूप से भेजा। सान्निध्य – प्रो. ग्लेन डी. पेज । स्थान – होनोलुलु – हवाई, यू.एस.ए. । 11 अगस्त, 1990

- इंटररिलिजियस फाउण्डेशन न्यूयार्क द्वारा आयोजित असेम्बली ऑफ वर्ल्डस रिलिजन्स (विश्व के धर्मों की सभा) में जैन धर्म तथा अन्य धर्म परम्पराओं पर आयोजित संवाद समूह में पत्र वाचन। स्थान – ह्यात रिजेन्सी होटल – सेनफ्रान्सिसको । 15 अगस्त से 21 अगस्त, 1990

- वर्ल्ड इंटरफेथ कॉलेज परियोजना कनाडा के निदेशक मार्क्स मकेविटी के आमंत्रण पर विक्टोरिया, ब्रिटिश कोलम्बिया में परियोजना के सदस्यों के सामने प्रस्तावित इंटरफेथ कॉलेज के स्वरूप पर जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में विशेष प्रस्तुति ।

- विक्टोरिया बीसी के फ्रेण्डस हाउस में आल्टरनेटिवज टु वायलेंस (हिंसा के विकल्प) नाम इसाई कार्यकर्ताओं के सक्रिय समूह में जैन परिप्रेक्ष्य में अहिंसा के विविध पहलुओं पर प्रस्तुति। 23 अगस्त, 1990

- लयोला मेरीमाउन्ट यूनिवर्सिटी, लोस एन्जल्स, यू.एस.ए. के थियोलोजी विभाग के प्रोफसर क्रिस्टोफर चेपल के निमंत्रण पर उनके छात्र–छात्राओं की कक्षा में जैन अहिंसा सिद्धान्त पर प्रस्तुति । स्थान – लोस एन्जल्स । 26 अगस्त, 1990

- स्टेनफर्ड केलिफोर्निया, यू.एस.ए. में 4 जुलाई से 6 जुलाई, 1991 तक आयोजित जैन एसोसिएशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका (जैना) के सम्मेलन में 'जैन धर्म की सार्वभौमिकता' पर व्याख्यान। जैना के निदेषकों की बैठक में 'क्या जैन धर्म विष्व धर्म बन सकता है' पर व्याख्यान।

- हिंदुइज्म टुडे के प्रबन्ध सम्पादक अमुगास्वामी के निमंत्रण पर हिन्दुइज्म के नवदीक्षितों की सभा में अहिंसा पर वार्ता । स्थान – कॉनकॉर्ड स्थित हिंदू मंदिर, केलिफोर्निया । 7 जुलाई, 1991

- अहिंसा प्रशिक्षण राजसमंद घोषणा की एक प्रति संयुक्त राष्ट्र महासचिव कार्यालय के निदेशक श्री वाशवर्न को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में उनके कार्यालय में 12 जुलाई, 1991 को भेंट की तथा उन्हें शांति एवं अहिंसक उपक्रम पर राजसमंद में सम्पन्न हुए द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की महत्वपूर्ण उपलब्धियों की जानकारी दी ।

- स्वामीनारायण सम्प्रदाय द्वारा प्रमुखा स्वामीजी के नेतृत्व में न्यूजर्सी यू.एस.ए. में आयोजित भारतीय सांस्कृतिक महोत्सव के अवसर पर प्रमुखाजी से आचार्य तुलसी के मिशन पर संवाद। (13 जुलाई, 1991)

- शुमेकर कॉलेज टोटनस इंगलैण्ड द्वारा आयोजित 'गाया, इकोलोजी एण्ड सिस्टम्स व्यू ऑफ लाइफ' पर प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी फ्रिटयोप कापरा के सान्निध्य में आयोजित पाँच सप्ताह (31 मई से 30 जून, 1003) चले शिक्षण में सहभागिता तथा इस बीच आयोजित अनेक संवादों में अणुव्रत की प्रस्तुति ।

- 1893 में आयोजित विश्व धर्म संसद की, जिसमें स्वामी विवेकानंद भाग लेने गए थे, 100वीं वर्षगांठ पर शिकागो के उसी उसी होटल में पुनः आयोजित विश्व धर्म संसद में 'अणुव्रत आन्दोलन : स्वरूपान्तरण और विश्व शांति का जैन मार्ग' पर बड़े स्तर पर प्रस्तुति । 30 जुलाई से 5 अगस्त, 1993

- प्रोफेसर बिल हेडले के निमंत्रण पर ड्यूकेन यूनिवर्सिटी, पीट्सबर्ग के समाज शास्त्र, दर्शन शास्त्र और मनोविज्ञान विभागों तथा आध्यात्म संस्थान में 'अणुव्रत जैन धर्म एवं अहिंसा' पर व्याख्यानों की श्रृंखला । समण स्थित प्रज्ञ जी ने तीनों दिन कक्षाओं में प्रेक्षाध्यान पर प्रयोग कराए। 7 अगस्त से 9 अगस्त, 1993

- जार्ज मेसन यूनिवर्सिटी, फेअरफील्ड, यू.एस.ए. की एक इकाई इंस्टीट्यूट ऑफ कनफ्लिक्ट रिजोलेशन एण्ड अनालिसिस के संकाय के सदस्यों के साथ अणुव्रत और अहिंसा पर सार्थक संवाद । इस संवाद में समण स्थित प्रज्ञ जी ने भी सक्रिय भाग लिया। 10 अगस्त 1993

- फंडेसिया पर ला पाउ नामक शांति संस्था की मेजबानी में इंटरनेशनल पीस ब्यूरो, जेनेवा द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'अहिंसात्मक कलह शमन' पर कार्यशाला का संचालन। स्थान – बारसेलोना, केटुलुनिया । 20 अक्टूबर से 22 अक्टूबर, 1994

- ओकिडो सेंटर रोम में 'अणुव्रत तथा नैतिक जीवन' पर विशेष व्याख्यान । 25 अक्टूबर, 1994

- संयुक्त राष्ट्र द्वारा कोपनहेगन, डेनमार्क में 06 मार्च से 14 मार्च, 1995 तक सामाजिक विकास पर आयोजित षिखर सम्मेलन में सहभागिता। इस षिखर सम्मेलन के अवसर पर सम्पन्न एक विषेष गोष्ठी में 'अणुव्रत आन्दोलन और सामाजिक एकीकरण' विषय पर पत्र वाचन।

- ओकिडो फेडरेशन इटली द्वारा आयोजित इंटरनेशनल एनकाउन्टर में एक विशिष्ट वक्ता के रूप में सहभागिता तथा उसी अवसर पर अहिंसा पर एक कार्यशाला का संचालन । स्थान – मिलान, इटली । 25 अप्रैल से 2 मई, 1995

- पीस क्वेस्ट इंटरनेशनल – स्वीडन के तत्वावधान में स्टोकहोम और उपसाला में अलग–अलग स्थानों पर आयोजित 'अहिंसा, अणुव्रत एवं जैन दर्शन' पर तीन विशेष व्याख्यान तथा निदेशक योन फिलेंडर की अध्यक्षता में पीस क्वेस्टर इंटरनेशनल के सदस्यों से 'अणुव्रत और पारिस्थितिकी' पर विशेष संवाद । 2 मई से 7 मई, 1995

- इंटरनेशनल पीस रिसर्च एसोसिएशन के द्विवार्षिक सम्मेलन के अवसर पर अहिंसा आयोग में 'अहिंसा के विविध रूप : साम्प्रदायिक संघर्ष का समाधान' पर पत्र–वाचन । मेजबान – क्वीन्सलैण्ड यूनिवर्सिटी, ब्रिजबेन – आस्ट्रेलिया । 7 जुलाई से 13 जुलाई, 1996

- क्योंग ही यूनिवर्सिटी की ग्रेज्यूएट इंस्टीट्यूट ऑफ पीस स्टडीज द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शांति सम्मेलन में 'भारतीय महाद्वीप के सन्दर्भ में जातीय एवं साम्प्रदायिक कलह : विहंगावलोकन, कारण तथा उपाय' पर पत्र–वाचन । स्थान – सोल, साउथ कोरिया । 17 सितम्बर से 19 सितम्बर, 1996

- हेंकक यूनिवर्सिटी ऑफ फोरेन स्टडीज के चयनित विद्यार्थियों की कक्षा में 'प्रेक्षाध्यान एवं अहिंसक जीवनशैली के लाभ' पर विशेष व्याख्यान एवं प्रश्नोत्तर कार्यक्रम । प्रो. जेरेमी सेलिग्सन ने अध्यक्षता की । 20 सितम्बर 1996

- दक्षिण कोरिया की बीसवीं मॉडल यूनाइटेड नेशन्स जनरल असेम्बली में 'एशिया–प्रशांत क्षेत्र में शांति' विषय पर विशेष व्याख्यान । 21 सितम्बर 1996

- न्यूयार्क स्थित इंटररिलिजियस फेडरेषन फॉर पीस द्वारा हमदर्द यूनिवर्सिटी में 12 से 15 दिसम्बर, 1996 में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी में 'अहिंसात्मक जैन परम्परा : अनन्य विषेषताएं एवं समान मूल्यों' पर पत्र वाचन।

- ओकिडो योगा फेडरेशन इटली द्वारा आयोजित फोर्थ इंटरनेशनल एनकाउन्टर में 'जीवन के सार तत्व' पर विशेष व्याख्यान । रोम – इटली । 30 मार्च 1997

- गांधी फाउण्डेशन, किंगसेहाल ब्राउनलो लंदन के तत्वावधान में 'शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण में धर्म की भूमिका' पर विशेष व्याख्यान । अध्यक्षता – डॉ. टॉमस डाफर्न ने की । 3 अप्रैल 1997

- गांधी सेंटर, गांधी केन्द्र, गांधी बापू मेमोरियल ट्रस्ट के तत्वावधान में 'गांधी और अहिंसा' पर विशेष व्याख्यान । स्थान – चेपमेन क्रेसेन्ट केन्टन, मिडिलसेक्स लंदन । 3 अप्रैल, 1997

- बिशप स्विंग द्वारा आयोजित यूनाइटेड रिलिजन्स इनिसिएटिव, वर्ल्ड असेम्बली स्टेनफर्ड, सेनफ्रांसिस्को में सहभागिता तथा जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों पर संवाद । 22 जून से 27 जून, 1997

- हाउस ऑफ कॉमन्स लंदन में इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पीस स्टडीज एण्ड ग्लोबल फिलोसोफी के निदेशक डॉ. टॉमस डाफर्न द्वारा आयोजित सेमिनार में 'नीति, नीति शास्त्र तथा जीवन मूल्य' पर भाषण । 6 जुलाई, 1998

- हारवर्ड यूनिवर्सिटी के विष्व धर्म अध्ययन केन्द्र द्वारा जैन दर्षन एवं पारिस्थितिकी पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी में जैन अहिंसा सिद्धान्त एवं पारिस्थितिकी पर पत्र वाचन (11–12 जुलाई, 1998)।

- इंस्टीट्यूट ऑफ जेनोलोजी लंदन के सदस्यों के साथ 'जैन धर्म को विश्व धर्म के रूप में प्रस्तुत करने के तरीको' पर संवाद। स्थान – लंदन – इंगलैण्ड । 14 जुलाई, 1998

- दक्षिणी अफ्रीका के केपटाउन में सम्पन्न पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्डस रिलिजन्स में 'जैन धर्म का अनेकान्त दर्शन तथा मानव अस्तित्व' पर पत्र–वाचन । 1 से 8 दिसम्बर, 1999

- प्रोटेस्टेन्ट तथा कैथोलिक चर्चेज, जर्मनी तथा एक्सपो – 2000 के प्रतिनिधियों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इंटरनेशनल इंटररिलिजयस डॉयलाग ऑन ह्यूमनकाइन्ड, नेचर एण्ड टेक्नोलॉजी में 'गरीबी पर जैन मत : बचाव एवं अल्पीकरण' पर पत्र–वाचन। स्थान – हेनोबर– जर्मनी । 12 सितम्बर, 2000

- हैदराबाद की हेनरी मार्टिन इंस्टीट्यूट द्वारा धार्मिक सामंजस्य पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी में 'जैन दर्षन का अनेकान्त दर्षन एवं धार्मिक सामंजस्य' पर पत्र वाचन।

- 07 दिसम्बर 2001 को स्वीडन की संसद में आयोजित राइट लाइवलीहुड अवार्ड प्रेजेन्टेशन सेरेमनी में सहभागिता की तथा इस इवसर पर राइट लाइवलीहुड अवार्ड के संस्थापक से अणुव्रत आन्दोलन के उद्देश्य और प्रवृत्तियों पर चर्चा की ।

- स्वीडन की संसद के कांफ्रेस रूम में आयोजित स्वीडन के संसद सदस्यों के एक समूह के साथ अणुव्रत आन्दोलन पर बहुत ही लाभदायक चर्चा हुई । 08 दिसम्बर, 2001

- बाली, इण्डोनेशिया में यूनाइटेड रिलिजन्स इनिसिएटिव द्वारा 13 दिसम्बर से 15 दिसम्बर, 2001 तक आयोजित अंतःधार्मिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जैन दर्शन के अनेकान्त सिद्धान्त पर व्याख्यान दिया। इस क्षेत्रीय सभा को 'शांति के लिए तीर्थयात्रा' कहा गया ।

- 01 जुलाई से 05 जुलाई, 2002 को इंटरनेशनल पीस रिसर्च एसोसिएशन द्वारा क्योंग ही यूनिवर्सिटी में आयोजित द्विवार्षिक सम्मेलन में सहभागिता की । इस अवसर पर एक पूर्ण सत्र में 'वैश्वीकरण के अन्तर्गत जातिवाद की चुन्नौतियाँ' विषय पर पत्र–वाचन किया ।

- जर्मनी के आकन शहर में 07 सितम्बर से 09 सितम्बर, 2003 तक कम्यूनिटी ऑफ सेंट एगिडिओ द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'जैन पारिस्थितिकी : तृतीय सहस्राब्दि में अस्तित्व में बने रहने का स्रोत' विषय पर पत्र–वाचन ।

- 05 से 09 जुलाई, 2004 को हंगरी के सोप्रोन शहर में इंटरनेशनल पीस रिसर्च एसोसिएशन द्वारा आयोजित अपने द्विवार्षिक सम्मेलन के एक विशेष सत्र में इपरा (इंटरनेशनल पीस रिसर्च एसोसिएशन) के भविष्य पर एक विचारोतेजक प्रस्तुति ।

  इपरा के इसी सम्मेलन में अहिंसा आयोग में 'भारतीय परम्परा में अहिंसा' पर प्रस्तुति। इसी सम्मेलन के शांति के सिद्धान्त आयोग में शांति : अवधारणा तथा व्यवहार पर व्याख्यान।

- संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग द्वारा न्यूयार्क मुख्यालय में आयोजित संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग तथा उसके द्वारा मान्यता प्राप्त विश्व के गैर–सरकारी संगठनों के 58वें सम्मेलन के अवसर पर 'युवकों का अहिंसा में प्रशिक्षण : आतंक एवं युद्ध से बचने का एक दीर्घकालीन उपाय' विषय पर पत्र–वाचन । इसमें अणुव्रत कार्यकर्ता श्री महेन्द्र जैन ने भी सहभागिता की । 8 सितम्बर,2005

- वर्ल्ड कांफ्रेस ऑफ रिलिजन्स फॉर पीस द्वारा 26 से 29 अगस्त, 2006 को जापान के क्योटो शहर में आयोजित विश्व के धर्मों की आठवीं सभा में सहभागिता तथा जैन काकस में विशेष प्रस्तुति ।

- इंदिरा गांधी खुला विष्वविद्यालय, इंडियन काउंसिल ऑफ गांधियन स्टेडीज तथा अणुविभा द्वारा इगनो के परिसर में आयोजित एक राष्ट्रीय गोष्ठी में अहिंसा के अर्थषास्त्र सत्र में मुख्य व्याख्यान दिया। (28 से 29 जनवरी, 2007)

- संयुक्त राष्ट्र साधारण सभा के अध्यक्ष द्वारा 04 और 05 अक्टूबर, 2007 को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, न्यूयार्क में आयोजित एक उच्च स्तरीय गोष्ठी के अवसर पर सिविल सोसाइटी के साथ साधारण सभा की इंटरऐक्टिव हियरिंग में जैन परिप्रेक्ष्य में शांति के लिए अंतःधार्मिक और अंतःसांस्कृतिक समझ विषय पर एक आमंत्रित पेनल स्पीकर के रूप में विषेष व्याख्यान दिया। मैं यूएन जनरल एसेम्बली के तत्कालीन अध्यक्ष द्वारा आमंत्रित किया गया था तथा मेरा चयन यूएन जनरल एसेम्बली द्वारा नियुक्त एक टास्क फोर्स द्वारा मेरिट के आधार पर किया गया।

- कम्यूनिटी ऑफ सेंट एगिडिओ द्वारा साइप्रस की राजधानी निकोसिया में 'शांति की सभ्यता, धर्म और संस्कृति संवाद में' पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'अनेकान्त : शांति एवं समन्वय का जैन मार्ग' पर पत्र–वाचन । 16 से 18 नवम्बर, 2008

- 7 से 9 सितम्बर, 2009 में क्रेकोव – पोलेण्ड में कम्यूनिटी ऑफ सेंट एगिडिओ द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'जैन शांति, मार्ग, सामंजस्य एवं सामाजिक सौष्ठव' पर पत्र–वाचन । इसमें अणुविभा के अध्यक्ष श्री टी.के. जैन ने भी सहभागिता की ।

- संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग द्वारा मेक्सिको में 9 से 11 सितम्बर, 2009 में आयोजित लोक सूचना विभाग तथा उसके द्वारा मान्यता प्राप्त गैर–सरकारी संगठनों के वार्षिक सम्मेलन में सहभागिता तथा 'अहिंसा की शक्ति द्वारा बड़ी संख्या में नरसंहार करने वाले शस्त्रों के विलोपन तथा आतंक की किलाबंदी तोड़ने' पर कार्याशाला का संचालन । मैंने आणविक निःषस्त्रीकरण – 'भारत और पाकिस्तान में मौलिक नैतिकता तथा अहिंसा द्वारा पारस्परिक सुरक्षा का झगड़ा मिटाना' विषय पर प्रारम्भिक एवं उपसहारात्मक वक्तव्य दिया। अणुविभा के अध्यक्ष श्री टी.के. जैन तथा अणुविभा ऑफ नार्थ अमेरिका के अध्यक्ष श्री किरीट दफ्तरी ने भी वक्ताओं के रूप में सहभागिता की ।

- जैन विश्व भारती लंदन द्वारा 1 से 10 नवम्बर, 2009 तक आयोजित अहिंसा प्रशिक्षण में प्रतिदिन अहिंसा के विविध पहलुओं पर व्याख्यान । कुल 10 व्याख्यान दिए ।

- मेलबोर्न – आस्ट्रेलिया में 3 से 9 दिसम्बर, 2009 तक आयोजित पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्डस रिलिजन्स में पर्यावरण एवं जैन धर्म के पेनल में 'जैन जीवनशैली का नया प्रतिमानः जैनों का पारिस्थितिकीय आचार संहिता के अनुसार जीवन जीना' तथा दूसरे पेनल में 'धर्म की भूमिका तथा संघर्ष की स्थिति में मध्यस्थता' पर व्याख्यान । इस सम्मेलन में जैन विश्व भारती की तत्कालीन कुलपति समणी मंगलप्रज्ञा तथा अन्य समणीवृन्द ने विभिन्न सत्रों में प्रस्तुतियाँ दी। अणुविभा के सचिव श्री संचय जैन ने बालोदय पर विशेष प्रस्तुति दी ।

- संयुक्त राष्ट्र लोक सूचना विभाग द्वारा 30 अगस्त से 1 सितम्बर, 2010 तक मेलबोर्न – आस्ट्रेलिया में आयोजित लोक सूचना विभाग एवं उसके द्वारा मायता प्राप्त गैर–सरकारी संगठनों के 63वें सम्मेलन में 'शांति एवं वहनीयता के लिए स्वस्थ जीवनशैली का नया उदाहरण' पर कार्यशाला का संचालन । इस सम्मेलन में श्री टी.के. जैन, श्री किरीट दफ्तरी, श्री बुद्धसिंह सेठिया तथा श्री संचय जैन ने भी पत्र–वाचन किए ।

- कम्यूनिटी ऑफ सेंट इगिडिओ द्वारा म्यूनिख – जर्मनी में 11 से 13 सितम्बर, 2011 को आयोजित अंतर्राष्ट्रय सम्मेलन के एक पेनल में 'जैन धर्म में शाश्वत जीवन मूल्य के रूप में अहिंसा' विषय पर पत्र–वाचन तथा उसी दिन दूसरे पेनल में 'पर्यावरणीय विकृति का जैन समाधान' विषय पर पत्र–वाचन ।

- इंटरनेशनल पीस रिसर्च एसोसिएशन द्वारा सुसिटी जापान में 24 से 26 नवम्बर, 2012 तक आयोजित अपने द्विवार्षिक सम्मेलन के प्रथम सत्र में अहिंसा एवं अपरिग्रह पर मेरा मुख्य भाषण तथा उसी सम्मेलन में धर्म और शांति आयोग में 'अंतःधार्मिक सामंजस्य में जैन गहन समझ' पर पत्र वाचन। इप्रा के अहिंसा आयोग में अहिंसा : शांति, न्याय तथा पारिस्थितिकीय समरसता का एकमात्र मार्ग पर पत्र वाचन।

- जापान के टोक्यो स्थित प्रेक्षाध्यान केन्द्र के शिविरार्थियों में अहिंसा पर विशेष व्याख्यान। 27 नवम्बर, 2012

- इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएण्टल फिलोसोफी टोक्यो जापान में इसके निदेशक डॉ. योइशी कवादा के आमंत्रण पर शोधकर्ताओं, संकाय सदस्यों एवं छात्र–छात्राओं की सभा में 'जैन धर्म का अहिंसा का सिद्धान्त तथा पारिस्थितिकी' पर विशेष व्याख्यान । 28 नवम्बर, 2012

- सोका यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष तथा रेक्टर के साथ अपने विष्वविद्यालय एवं अणुविभा के आपसी सहयोग पर महत्वपूर्ण संवाद। 30 नवम्बर, 2012

- जापान प्रेक्षाध्यान समिति तथा ओकीडो सेन्टर के संयुक्त तत्वावधान में समिति के सदस्यों के लिए जैन धर्म के मूल सिद्धान्तों पर एक विषेष रात्रिकालीन व्याख्यान। मुझे जापान के ख्यातिप्राप्त जैन अनुसंधानकर्ता तथा समिति के संस्थापक सम्माननीय साकामोटो द्वारा आमंत्रित किया गया था।

- संयुक्त राष्ट्र संघ लोकसूचना एवं संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से काम करने वाली विष्व भर में फैली संस्थाओं के प्रतिनिधियों के वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर भविष्य की पारिस्थितिकी एवं वहनीयता पर अगस्त 27, 2014 को आयोजित कार्यषाला में 'वहनीयता का संकट तथा वहनीय विष्व की परिकल्पना' विषय पर पत्र वाचन। इस कार्यषाला का संचालन अणुविभा के यूएन प्रतिनिधि श्री अरविंद वोरा ने किया।

- कम्यूनिटी ऑफ सेंट इगिडिओ द्वारा जर्मनी के दो शहरों मून्स्टर और ओस्नाबर्क में दो भागों में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी में भाग लिया। मून्स्टर में सम्पन्न 'विभिन्न धर्मों द्वारा अहिंसा पर चुन्नोतियां' नाम के विषय के अंतर्गत मैंने 'अहिंसा : जैन धर्म का प्रतिनिधिक लक्षण' पर पत्र वाचन किया। 10 से 12 सितम्बर, 2017।

अणुव्रत अंतर्राष्ट्रीय अभियान की तीन विशिष्ट उपलब्धियाँ

- संयुक्त राष्ट्र द्वारा डेनमार्क, कोपनहेगन में सामाजिक विकास पर आयोजित प्रथम शिखर सम्मेलन में राष्ट्राध्यक्षों के अलावा सिविल सोसाइटी के प्रतिनिधियों को भी समानान्तर संवाद के लिए नियंत्रित करने का निर्णय हुआ । अणुविभा ने भी इस सम्मेलन में बुलाए जाने के लिए संयुक्त राष्ट्र को आवेदन किया । उस वक्त अणुविभा संयुक्त राष्ट्र की मान्यता प्राप्त संस्था नहीं थी । हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब अणुविभा का इसमें सहभागिता के लिए चयन किया गया जिसका आधार अणुव्रत आन्दोलन माना गया जो सामाजिक समरसता के प्रति प्रतिबद्ध है । 6 से 12 मार्च, 1995 तक आयोजित उक्त सम्मेलन में मुझे अणुव्रत की

प्रस्तुति का अवसर मिला । मेरी सभा में अनेक देशों के यू.एन. अधिकारी थे । इसमें श्री पुखराज जी लुणिया ने भी सहभागिता की ।

- दूसरी विशिष्ट उपलब्धि थी – हारवर्ड विश्वविद्यालय के विश्व के धर्मों के अध्ययन केन्द्र द्वारा 'जैन दर्शन एवं पारिस्थितिकी' पर आयोजित सेमिनार में मेरा पत्र–वाचन स्वीकृत । मैंने आचार्य श्री महाप्रज्ञ के विचारों के परिप्रेक्ष्य में 'अहिंसा एवं पारिस्थितिकी' पर पत्र–वाचन किया। इस सम्मेलन में विश्व के चोटी के विद्वानों को आमंत्रित किया गया और मेरे जैसे जैन दर्शन के साधारण विद्यार्थी के पेपर का चयन मेरे लिए विशिष्ट उपलब्धि थी ।

- तीसरी विशिष्ट उपलब्धि थी – संयुक्त राष्ट्र साधारण सभा अध्यक्ष द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में 4–5 अक्टूबा, 2007 को शांति के लिए अंतःधार्मिक समझ एवं सहयोग पर आयोजित एक उच्च स्तरीय संवाद के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र साधारण सभा की सिविल सोसाइटी के साथ इंटरएक्टिव हियरिंग में मेरा एक पेनल वक्ता के रूप में चयन होना । मैंने अनेकान्त पर बोलने के प्रस्ताव में 100 शब्दों में मेरे प्रस्तावित भाषण का सार–संक्षेप भेजा था । टॉस्क फोर्स ने हजारों प्रविष्टियों में से मेरे प्रस्ताव को चुना। संयुक्त राष्ट्र के गलियारों में पहली बार अहिंसा यात्रा एवं अनेकान्त की गूंज हुई। इस संवाद में मैंने अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) के अध्यक्ष के रूप में प्रतिनिधित्व किया ।

साहित्य सर्जन, सम्पादन एवं अंग्रेजी में अनुवाद

मेरे द्वारा लिखित पुस्तकें

- के.जे. सौम्मेया भारतीय संस्कृति पीठम मुम्बई एवं इंस्टीट्यूट ऑफ जैनोलोजी द्वारा प्रकाषित पुस्तक इंडियन फिलोसोफिकल टर्म्स : ग्लोसरी एवं सोर्सेज में जैन दर्षन विभाग 80 जैन टैक्निकल टर्म्स की व्याख्याएं। अब एक रिवाइज्ड स्वतंत्र पुस्तक तैयार की जा रही है जिसमें 200 से अधिक टर्म की व्याख्याएं होगी।

- अमृत पुरुष आचार्य तुलसी : निःस्वार्थ समर्पण के पचास वर्ष प्रकाषन, जैन विष्व भारती, 1985।

- अणुव्रत मूमेन्ट : कन्स्ट्रक्टिव एनेडेवर टूवार्डस अ मल्टिकल्चरल नोनवाइलेंट सोसाइटी।

- आचार्य महाप्रज्ञ : अ जर्नी टू विजडम, हॉर्पर कोलिन्स एलीमेंट द्वारा प्रकाषित, 2015।

मेरे द्वारा संपादित /अनुवादित पुस्तकें

- आचार्य तुलसी अ पीसमेकर पार ऐक्सीलेंसी, सम्पादित एवं अंग्रेजी में अनुवादित।

- आचार्य तुलसी : फिफ्टी इयर्स ऑफ सेल्फलेस डेडीकेषन (अंग्रेजी), प्रकाषन – जैन विष्व भारती, लाडनूं, 1985। मुख्य संपादक प्रो. आर.पी. भटनागर तथा मैं कार्यकारी संपादक था।

- धर्मचक्र का प्रवर्तन (हिन्दी), प्रथम संस्करण, प्रकाषन – जैन विष्व भारती, लाडनूं, 1986।

- अणुविभा – हिन्दी में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेस की रिपोर्ट, प्रकाषन – अणुव्रत विष्व भारती, राजसमंद। (मार्च 1989)

- शांति एवं अहिंसक उपक्रम पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों द्वारा जारी घोषणा पत्र (अंग्रेजी) – लाडनूं घोषणा (1988), अहिंसा प्रषिक्षण पर राजसमंद घोषणा (1991), अहिंसक विष्व और आध्यात्मिक रूपान्तरण द्वारा पारिस्थितिकीय समरसता पर लाडनूं घोषणा (1995)।

- आचार्य तुलसी के स्वर्गारोहण के बाद उनकी स्मृति में अंग्रेजी में प्रकाषित ग्रंथ जुलाई 1997, प्रकाषन – अणुव्रत विष्व भारती, राजसमंद।

- शांति एवं अहिंसक उपक्रम पर दिल्ली में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में सम्पन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट (अंग्रेजी), 1999, प्रकाषन – अणुव्रत विष्व भारती, राजसमंद। पृष्ठ 320

- ट्रेनिंग इन नोनवाइलेंस : थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस – आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखित तथा मेरे द्वारा सम्पादित एवं अंग्रेजी में अनुवादित। प्रकाषन – अणुव्रत विष्व भारती, राजसमंद, 2009।

- कोन्ट्रिबुषन ऑफ आचार्य महाप्रज्ञ टू इण्डियन कल्चर द्वारा प्रो. दयानन्द भार्गव, प्रकाषन – जैन विष्व भारती संस्थान, लाडनूं (2017)। मेरे द्वारा संपादन।

- शांति एवं अहिंसक उपक्रम पर जयपुर में 2014 में आयोजित आठवीं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट 'अहिंसा की ओर' (अंग्रेजी) मेरे द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित। पृष्ठ 360।

- नैतिक पाठमाला – आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी अंग्रेजी में मेरे द्वारा अनुवादित, टाइटल – मोरल एण्ड स्पिरिच्युअल वेल्यूज, प्रकाषन – आदर्ष साहित्य संघ । अगस्त, 1976।

- नया युग : नया दर्षन मुनि नागराज। अंग्रेजी में टाइटल – न्यू एज : न्यू आउटलुक। अरिहंत प्रकाषन कलकत्ता, जून 1981।

उपसंहार

न्यूयार्क से प्रकाशित टाइम पत्रिका में 15 मई 1950 के अंक से प्रारम्भ हुई अणुव्रत की गूंज आज दुनिया के कई देशों में सुनाई दे रही है । अणुव्रत की विशिष्ट पहिचान बनी है । पारिस्थितिकीय एवं पर्यावरणीय विकृति के परिप्रेक्ष्य में अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रही मानवता के लिए अणुव्रत एक प्रकाश शिखा है । इस संकट का अणुव्रत ही एकमात्र समाधान है। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों में अणुव्रत की व्यापक स्वीकार्यता अणुविभा के पदाधिकारियों एवं अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए सात्विक गर्व की बात है । यह, यह भी दर्शाता है कि गणाधिपति तुलसी वस्तुतः महामानव थे जिन्होनें अपने मौलिक चिंतन एवं पुरुषार्थ से विश्व को आलोकित किया तथा मानव उत्थान के अभिनव उपक्रम के रूप में उनका अणुव्रत अभियान ही उनका मानवता के लिए सबसे बड़ा अवदान है। इस अभियान को आगे बढ़ाने में श्री टी.के. जैन एवं श्री संचय जैन की भूमिका वस्तुतः श्लाग्य है। अणुविभा के संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थाई प्रतिनिधि श्री अरविंद वोरा तथा वैकल्पिक प्रतिनिधि श्री किरीट दफ्तरी तथा डॉ. पन्ना शाह पश्चिम में अणुव्रत की मशाल को प्रज्वलित रखे हुए हैं। वे सब साधुवाद के पात्र हैं।